स्वास्तिक

वर्ष 1 अंक 02 सितम्बर 2023 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

साहित्यिक सचेतना पटल पर विभिन्न आयोजन

स्वास्तिक

वर्ष 1, अंक 2 : मासिक पत्रिका : सितम्बर 2023 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

परामर्श
(*वरिष्ठ रचनाकार*)
1. कमल भास्कर
2. आनंद रावत
3. संतोष सोनी 'तोशी'
4. सीमा गर्ग 'मंजरी'

संरक्षक
1. आसुतोष जायसवाल
2. नीरजा मेहता 'कमलिनी'
3. मोहन सिंह रावत

प्रकाशक
साहित्यिक सचेतना

संस्थापक
नरेंद्र रावत 'नरेन'

संपादक
प्रीति डिमरी 'प्रणया'

व्यवस्थापक मंडल
शशिकांत पराशर 'अनमोल'
सरोज डिमरी
दमयंती राणा
उर्मिला पपनोई
चंदेल साहिब

सहायक मंडल
शारदा कानोरिया
यशोदा मैठाणी
विजया सजवाण
डॉ. माधवी मिश्रा 'शुचि'

कानूनी सलाहकार
मोहम्मद अफसर सैफी

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं पर प्रकाशक एवं संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

संपादकीय कार्यालय
Saahityik Sachetna
C/o Sachetna Pragati Sangh
Flat number -73, B2, Subhdales Colony,
Gangapur Road, Fulsungi, Uddham Singh
Nagar, Uttarakhand - 263153.
मोबाइल : 8392937240
ईमेल : rawat1narendrasingh@gmal.com

लेजर टाईप सेटिंग : श्रीसाहित्य प्रकाशन, डी. 580, अशोक नगर, गली नं. 4, शाहदरा, दिल्ली–110093; मो. 9873390338

इस अंक में...

सचेतना से स्वास्तिक : एक सफर 03
संस्थापक की कलम से 04
संपादकीय 05

सन्देश शुभकामना 6-14

गणेश वंदना
1. गणपति गजानन प्यारे : चंदेल साहिब प्रथमेश 17

सरस्वती वंदना
1. हे ज्ञान की देवी : विजया सजवाण 18

भावपल्लवन
1. मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत : रेखा तिवारी 'कुमुद' 19

दार्शनिक आलेख
1. अद्वैत दर्शन आधारित सनातन, धर्म सिद्धान्त : नरेंद्र रावत 'नरेन' 21
2. 'पंचदोष' (कारण और निवारण) : प्रीति डिमरी 'प्रणया' 23

जन्माष्टमी विशेष कविताएँ
1. कृष्ण जन्म उत्सव : योगेश्वरी भारद्वाज 24
2. जन्माष्टमी : शारदा कनोरिया 24
3. राधा व मीरा : आनंद रावत 25
4. कृष्ण कन्हैया : उर्मिला पपनोई 26
5. कृष्ण मुरारी : मीनाक्षी भास्कर 27
6. हे ! कृष्ण कन्हैया आ जाओ : लक्ष्मी चंद्रवाल 27
7. कान्हा बड़ा उदास : डॉ माधवी मिश्रा 'शुचि' 28
8. कान्हा से लागी लगन : हेमा जैन 28
9. मुक्तिधाम : माधुरी शर्मा मधुर 29

सामाजिक कहानी
1. अपनों का साथ, अपनों का हाथ : आशुतोष जायसवाल 30
2. संघर्ष की कहानी : दमयंती राणा 32
3. अकेली : डॉ. लीला दिवान 33
4. दरख्तों के साये में : स्मृति मिश्रा 'रीति' 35

छंद/गीत/गजल
1. श्याम तेरी बंसी : नीरजा मेहता 'कमलिनी' 38
2. प्रेम नगर इक चलो बसाएँ : निशा अतुल्य 38
3. सत्संग में बरसे श्याम रंग : सीमा गर्ग 'मंजरी' 39

बेटी
1. शुभकामनाएँ : डॉ शशिकान्त पाराशर 'अनमोल' 39
2. बेटियाँ बोझ नहीं होतीं : जुगल किशोर त्रिपाठी 40

सामान्य कविता (गीत)
1. प्रकृति : कमल भास्कर 41
2. राधिका सी प्रतिबिंब लगत चाँद : शशिकला व्यास 'शिल्पी' 41
3. संतति : सरोज डिमरी 42
4. प्रेम : यशोदा मैठाणी 43
5. छोड़ सभी हम पॉलीथीन को, धरती अपनी चलो संवारे : चंदा डांगी 44
6. अरुण की बेला : निशा भास्कर 44
7. शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2023 : श्रीकांत डोबरियाल 45

माँ की स्तुति
1. आओ माँ के चरण गहें : ऋतु अग्रवाल 46

चंद्रयान विशेष
1. कीर्तिमान : एम. रफीक कुरैशी 46
2. चंद्रयान : 3 : मंगेश सिंह 47

सामाजिक आलेख
1. कृष्ण जन्मोत्सव : सन्नू नेगी 48
2. मेरी याद, मेरा वृक्ष, पर्यावरण रक्षक : सुनील भट्ट 49

सचेतना से स्वास्तिक : एक सफर

माँ शारदा की अनुकंपा व आशीर्वाद से 1 मई 2023 से सचेतना का सफर शुरू हुआ। इसमें आप सब सहयात्री बने, हृदय से आप सब का हार्दिक अभिनंदन। सचेतना ने अपने कुछ उद्देश्य निर्धारित किये, जो सर्वहितकारी तथा सार्वभौमिक हैं। निरंतर इन्हीं उद्देश्यों पर सचेतना निरंतर कार्यशील है।

इसी सफर में सचेतना ने एक और कदम आगे बढ़ाते हुए साहित्य की दुनिया में कदम रखा। 3 जून, 2023 को साहित्यिक सचेतना का गठन हुआ और अनेक साहित्यकारों के साथ इस सफर की शानदार शुरुआत हुई। नित्य प्रति पटल पर रचनाओं का बेहतरीन सृजन एवं अनेक आयोजन आयोजित होते रहे। साहित्यिक सचेतना ने भारतीय अद्वैत दर्शन व वैदिक सनातन सिद्धान्तों को प्रचारित करने हेतु 23 जुलाई, 2023 को अपनी स्वास्तिक पत्रिका के प्रकाशन की घोषणा की। 15 अगस्त, 2023 को स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर ऑनलाइन गूगल मीट पर पत्रिका का शानदार वह भव्य विमोचन किया गया। पत्रिका अनेक रचनाकारों की रचना से सुशोभित है। पत्रिका को आप सब ने असीम प्रेम दिया इसके लिए साहित्यिक सचेतना आप सबको हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करता है।

4 सितंबर, 2023 से साहित्यिक सचेतना पटल पर हिंदी पखवाड़ा दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें सभी साहित्यकारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 4 सितंबर से 14 सितंबर हिंदी दिवस तक बेहतरीन आयोजन आयोजित किए गये। जिसमें प्रतिदिन अनेक विषयों पर रचनाएँ सृजित की गयी। दो दिन वीडियो के माध्यम से भी शानदार प्रस्तुति दी गयी। अंतिम दिन सभी रचनाकारों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस आयोजन का महत्व हिंदी को बढ़ावा देना था जिसका प्रयोग सफल रहा।

आशा करते हैं कि आप सचेतना के साथ इस सफर पर यूहीं साथ बढ़ते रहेंगे। आप सबका साथ हमारा संबल है। आप सबके असीम स्नेह को हृदय से हार्दिक अभिनंदन।

—सचेतना

संस्थापक की कलम से

'स्वास्तिक' मासिक पत्रिका के सभी पाठकों एवं साहित्यकारों को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

स्वास्तिक पत्रिका के दूसरे अंक के साथ आप सबके सम्मुख उपस्थित हैं। आप सबने स्वास्तिक पत्रिका के प्रथम अंक 'स्वतंत्रता विशेषांक' को अपना जो स्नेह दिया उसके लिए आपको हृदय से कोटि-कोटि धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

पत्रिका को स्वास्तिक नाम देना सनातन सिद्धांतों का प्रसार करना है। स्वास्तिक न केवल शुभता का प्रतीक है बल्कि यह हमारे मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी करता है। स्वास्तिक की चारों भुजाएँ जीवन के चारआयाम, चारदिशाएँ, चारवेद, चारधर्म, चारवर्ण, चारआश्रम, चारयुग, चारपुरुषार्थ, चारसंस्कार आदि को इंगित करता है। स्वास्तिक के साथ साहित्य का यह सफर निरंतर ऐसे ही गतिमान रहेगा। स्वास्तिक समाज में सनातन की प्रतिष्ठा के लिए सदैव समर्पित है।

स्वास्तिक का द्वितीय अंक सतस्वरूप भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण अवतार हैं। वह एक ऐसे युग पुरुष है जो गोकुल में माखन चुराते हैं वहीं धर्म क्षेत्र के मैदान पर गीता का सार सुनाते हैं। सुदामा से मैत्री में सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हैं, वहीं अर्जुन को धर्म याद दिलाकर गाण्डीव उठवाते हैं। एक संपूर्ण सतव्यक्तित्व अगर कोई है तो वह श्री कृष्ण हैं। जो मानवीय जीवन जीने के लिए प्रेम का संदेश देते हैं और सतज्ञान के लिए भगवदगीता रचकर मानव जीवन विकास के द्वार खोलते हैं।

सतस्वरूप भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मनुष्य के तन, मन, प्राण एवं आत्मा रूपी चारों पंखुड़ियों के खिलने का सार ही भगवदगीता है। मनुष्य में कर्मयोग की सामर्थ्य तन में होती है, ज्ञानयोग की सामर्थ्य मन में होती है, भक्तियोग की सामर्थ्य प्राण में होती है एवं ध्यानयोग की सामर्थ्य आत्मा में होती है। कुरुक्षेत्र के युद्धभूमि में भावुकता के कारण अर्जुन शक्तिहीन हो जाता है। तब सत्यस्वरूप श्रीकृष्ण अपना विराट, सर्वव्यापी, सत्यात्मक रूप प्रकट कर अर्जुन की चेतना में ध्यानयोग का सामर्थ्य देते हैं। भौतिक शरीर एवं अमिट आत्मा का उपदेश देकर सत्यात्मकता का शरण ग्रहण कर अर्जुन के हृदय में भक्तियोग का सामर्थ्य देते हैं। सतरूपी परमात्मा, आत्मा, ईश्वर, मोक्ष का वास्तविक सतज्ञान का उपदेश देकर अर्जुन के मन में ज्ञानयोग का सामर्थ्य देते हैं। मानवीय प्रवृति, कर्मफल सिद्धांत एवं मानव जीवन के पुरुषार्थ का उपदेश देकर अर्जुन के तन में कर्मयोग का सामर्थ्य देते हैं।

अर्थात सतस्वरूप श्रीकृष्ण जन्माष्टमीपर्व के शुभअवसर पर भगवदगीता में दिये गये सिद्धांतों तन में कर्मयोग, मन में ज्ञानयोग, हृदय में भक्तियोग एवं आत्मा में ध्यानयोग को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लेकर अपने मानव जीवन के पुरुषार्थ को प्राप्त करें।

आप सबका साथ यूहीं स्वास्तिक पत्रिका के साथ सदैव रहेगा यही कामना है। स्वास्तिक आपके हृदय पटल पर अंकित होगी यही हमारी कोशिश है।

एक बार पुनः आप सभी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की मंगलमय शुभकामनाएँ।

—नरेंद्र रावत 'नरेन'
अध्यक्ष/संस्थापक
साहित्यिक सचेतना एवं स्वास्तिक पत्रिका

सम्पादकीय

आप सभी पाठकों को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। स्वास्तिक पत्रिका का दूसरा अंक लेकर आप सबके सम्मुख उपस्थित हैं। आप सबने स्वास्तिक पत्रिका के प्रथम अंक को बेहद स्नेह दिया, इसके लिए हम आपके आभारी हैं। स्वास्तिक भारतीय सनातन से जुड़ा ऐसा नाम है जिसके साथ हर भारतीय की भावनाएँ जुड़ी हैं।इसी को ध्यान में रखते हुए स्वास्तिक नित्य प्रति अपने उत्कृष्ट सृजन की ओर बढ़ता जा रहा है।

श्री कृष्ण एक युग पुरुष हैं, जिन्होंने समाज को गीता का उपदेश दिया। जिन्होंने प्रेम बांसुरी बजाकर प्रेम का संचार किया। जिन्होंने धर्म का उपदेश देकर धर्म की स्थापना की ओर प्रथम कदम बढ़ाया। श्री कृष्ण एक ऐसे पूर्ण अवतारी पुरुष हैं जिन्होंने इस समाज को एक नई सोच प्रदान की। श्री कृष्ण एक ऐसे युग पुरुष हैं जिन्होंने भगवतगीता प्रदान कर इस समाज को सबसे अमूल्य वरदान प्रदान किया। श्री कृष्ण एक ऐसे युग पुरुष हैं जिन्होंने संसार को कर्म का सिद्धांत दिया। इसलिए हम अपने इस द्वितीय अंक को भगवान श्री कृष्ण को समर्पित करते हैं।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के शुभ अवसर पर सभी रचनाकारों की रचनाओं से सुशोभित स्वास्तिक आप सबके सम्मुख समीक्षार्थ उपस्थित है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भगवान श्री कृष्ण की असीम कृपा से आप सबको यह अंक भी बहुत पसंद आएगा, और इस अंक को भी आपका स्नेह प्राप्त होगा।

एक बार पुन: आप सभी को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व की हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ।

—प्रीति डिमरी 'प्रणया'
सचिव/संपादिका
साहित्यिक सचेतना एवं स्वास्तिक पत्रिका

संदेश शुभकामना

शुभवचन...

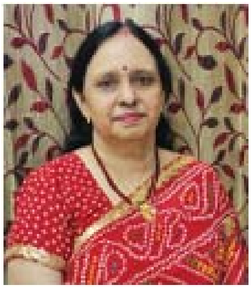

सनातन अर्थात शाश्वत, जिसका न आदि है न अंत और जहाँ शाश्वत शब्द जुड़ जाये वहाँ ईश्वरीय शक्ति समाहित हो जाती है। सनातन धर्म को हिंदू धर्म के वैकल्पिक नाम से भी जाना जाता है। सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को मानता है और यही सत्य है। हमारे जन्म से मृत्यु के बीच का समय ही जीवन है और इस जीवन के सत्य को समझना, इसकी चेतनता को जानना ही सार्वभौमिक सत्य है। इस क्षणभंगुर जीवन के सार को जो समझ लेता है, यथार्थ में उसी ने जीवन जिया है। जो स्वयं से साक्षात्कार कर लेता है, वो जीवन के शाश्वत सत्य को समझ लेता है।

पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु इन पंचमहाभूतों से निर्मित मानव शरीर इसी में विलय भी हो जाता है। पंचमहाभूतों के साथ आत्मा का जुड़ जाना जन्म है, पंच महाभूतों से आत्मा का अलग हो जाना मृत्यु है—यही शाश्वत सत्य है और इस सत्य को जानने, समझने, पहचानने के लिए मानव आध्यात्म का सहारा लेता है। जब आध्यात्म की बात आती है तो अद्वैतवाद हमको एक होकर देखना सिखाता है और जब अद्वैत कहा जाए तो समाज को लाभान्वित करने के उद्देश्य से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक संचेतना आवश्यक हो जाती है इसीलिए ''स्वास्तिक'' पत्रिका ने साहित्य को मार्ग बनाया जिसके द्वारा जन-जन के अंदर चेतनता जागृत हो। साहित्य एक सरल, सुगम मार्ग है धर्मज्ञान को सुरक्षित रखने का, अंतर्मन को खोलने का और भारतीय वैदिक सनातन सिद्धांत को जानने का।

जन कल्याण एवं सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य की भावना को लोगों तक पहुँचाने के लिए आदरणीय नरेंद्र रावत 'नरेन' जी द्वारा ''साहित्यिक सचेतना'' मंच का निर्माण किया गया जिसको मंच की सचिव आदरणीया प्रीति डिमरी 'प्रणया' जी द्वारा विस्तार दिया जा रहा है। जब एक बालक पढ़ना शुरू करता है तब से अंतिम समय तक साहित्य से उसका नाता जुड़ा ही रहता है। किसी न किसी रूप में साहित्य पठन-पाठन में आता ही है इसी कारण यदि यह कहा जाए कि साहित्य अर्थात जो सबका हित करे वो निश्चित ही शाश्वत है, सनातन है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। साहित्य के द्वारा सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य को समझना व जीवन में उतारना साहित्यिक सचेतना का मर्म है।

आध्यत्मिकता के रंग में रंगने के लिए ध्यान, प्रार्थना और चिंतन आवश्यक है जो जीवन के सार का अनुभव हमको कराते हैं क्योंकि आध्यात्मिकता अंतस की खोज को पूर्ण करती है। जीवन के सत्य को समक्ष दिखाती है और जो इस शरीर में रहकर परमात्मा के विराट रूप को समझ पाता है, उसे अनुभव कर पाता है, वही आध्यात्म है, साथ ही हर प्राणी में उस परम सत्ता को देखना आध्यात्मिकता है। यह बहुत ही विस्तृत विषय है जिस पर जितना पढ़ा जाए कम है, जितना लिखा जाए कम है किंतु यह सत्य है कि साहित्य की विभिन्न विधाओं द्वारा इसको समझना सरल है क्योंकि यह एक जिज्ञासा उत्पन्न करता है और इस तरह इसको समझने का मार्ग प्रशस्त होता जाता है।

स्वास्तिक शब्द में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना निहित है। ऋग्वेद की ऋचा में स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना गया है, अन्य ग्रन्थों में कहीं चार वेद, चार युग, चार वर्ण, चार आश्रम एवं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से ओत-प्रोत बताया गया है। यह शब्द स्वयं में मंगलकारी है और मंच के उद्देश्य को देखते हुए पत्रिका का नाम ''स्वास्तिक'' सर्वथा उपयुक्त है। ''साहित्यिक सचेतना'' मंच द्वारा प्रकाशित ''स्वास्तिक'' पत्रिका के द्वितीय अंक ''श्री कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक'' लिए मैं आदरणीय नरेंद्र रावत 'नरेन' जी को व आदरणीया प्रीति डिमरी 'प्रणया' जी के साथ सभी प्रदेश प्रभारियों, सभी पाठकों व इस मंच से जुड़े सभी साहित्यकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ एवं मुझे इस पत्रिका का

संरक्षक नियुक्त करने के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित

—डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'
निवास—गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रथम पूजनीय भगवान गणेश की कृपा से हम अपनी मासिक पत्रिका 'स्वास्तिक' का सफल विमोचन करने जा रहे हैं। हमारे सभी मर्मज्ञ और तत्वज्ञ साहित्यकारों को मेरा यथोचित अभिवादन, स्नेह, प्यार, और आशीर्वाद—

—आशुतोष जायसवाल
बैंगलोर

साहित्यिक सचेतना के सदस्यों द्वारा ''स्वास्तिक'' मासिक पत्रिका का प्रकाशन होने पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। पत्रिका की सफलता के लिए के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!

—मोहन सिंह रावत
हरियाणा सरकार की सेवा से अवकाश प्राप्त
निवास स्थान—गुरुग्राम हरियाणा

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि साहित्यिक सचेतना अपनी मासिक पत्रिका ''स्वास्तिक'' का द्वितीय प्रकाशन जन्माष्टमी विषेशांक के रूप में प्रकाशित करने जा रही है ।साहित्यक सचेतना एक ऐसा पटल है जो अद्वैत भारतीय दर्शन साहित्य एव वैदिक सनातन की और साथ ही साथ भारतीय संस्कृति विज्ञान की अमूल्य जानकारी उपलब्ध करवाता है।आज की नई पीढ़ी अपनी अद्भुत और विलक्षण सांस्कृतिक विरासत से दूर होती जा रही है, और पाश्चात्य संस्कृति की ओर अग्रसर हो रही है,जिस कारण नैतिक मूल्यों का दिन प्रति दिन ह्रास होता जा रहा है। भारतीय संस्कृति और दर्शन इतना गरिमापूर्ण और रहस्यमयी है कि जिसमें सभी सिद्धान्तों का अनंत वर्षों पूर्व ही प्राकट्य कर दिया था। हिन्दी और संस्कृत भाषाओं का निरंतर परित्याग से आज समाज में कई प्रकार की अनियमितताएँ आ गयी हैं, और अब सही समय आ गया है कि इस माध्यम द्वारा नई पीढ़ी की विचारधाराओं में भारतीय संस्कृति की भी स्मृति कराई जाए ताकि नयी पीढ़ी भारतीय दर्शन के सुदर्शन कर सकें।

मैं पत्रिका के प्रथम मासिक संस्करण पर सभी संपादकीय मंडल के सभी सदस्यों का ह्रदय की गहराइयों से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ व पत्रिका के सफल संपादन की बहुत बहुत शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ

सादर।

—कमल कुमार भास्कर
जालंधर, पंजाब

सांस्कृतिक संचेतना मंच का मुखपत्र/ मासिक पत्रिका ''स्वास्तिक'' का अगस्त अंक प्रकाशित हो चुका है। इस अंक में लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों/ रचनाकारों की सनातन संस्कृति व भारतीय अद्वैत दर्शन के विभिन्न आयामों पर शिक्षाप्रद एवं सूचनाप्रद लेख व काव्य रचनाएँ सम्मिलित हैं। निश्चित तौर पर पत्रिका में शामिल प्रत्येक रचनाकार/लेखक की रचना पठनीय व सारगर्भित है, जोकि पत्रिका की अंतर्वस्तु की गुणवत्ता को परिभाषित कर सुधि पाठकों के लिए संग्रहणीय बनाती है।

स्वास्तिक पत्रिका का सितम्बर अंक नए कलेवर के साथ प्रकाशित होने जा रहा है, जिसमें उपलब्ध प्रतिष्ठित

रचनाकारों/ साहित्यकारों, इस बीच सांस्कृतिक संचेतना मंच से जुड़े नये रचनाकारों की भारतीय वैदिक संस्कृति पर आधारित अद्वैत दर्शन की चिर पुरातन संस्कृति के विभिन्न विषयों पर रोचक व सारगर्भित शीर्षकों के नये संदर्भों सहित लेख/ रचनाएँ शामिल कर पत्रिका को गुणवत्ता के मानदंडों पर खरा उतारने और सुधि पाठकों में इसे और अधिक लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से साहित्यिक संचेतना मंच सदैव प्रयासरत एवं कृतसंकल्प है।

भारतीय सनातन संस्कृति के अद्वैत दर्शन की महत्ता व उसके प्रचार-प्रसार व जनचेतना जागृत कर, विश्व पटल के मंच पर इसका संप्रेषण करने के उद्देश्य से संचालक मंडल का सराहनीय प्रयास है।

इस अप्रतिम कार्य के लिए मंच को सादर नमन एवं साधुवाद।

पत्रिका की संपादकीय टीम को पत्रिका के आवरण सज्जा व अंतर्वस्तु के कुशल संपादन के लिए अशेष शुभकामनाएँ।

—आनंद रावत
गुरुग्राम

स्वास्तिक यानि शुभभाव, कल्याण एवं मंगल वर्तमान समय में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जागृत करने हेतु स्वास्तिक पत्रिका निश्चित ही जन-मानस के कल्याणार्थ सेतु बंध का कार्य करेगी।

सभी का शुभ हो।

जय जय।

—संतोष सोनी 'तोषी'
जोधपुर (राज.)

मानव जीवन दिव्य जीवन है। इस दिव्य जीवन को प्राप्त करके प्राणी मन, बुद्धि, चित्त एवं चेतना की शक्ति द्वारा सत्य को जानने का प्रयास करता है। जब जिज्ञासु साधक के हृदय में 'मैं कौन हूँ?' ऐसा प्रश्न उत्पन्न होता है। तब प्रयास शील जिज्ञासु प्रवृत्ति के मननशील मानव शाश्वत सत्य सनातन धर्म संस्कृति को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। जिससे ब्रह्माण्ड के प्रति उसके दृष्टिकोण का विस्तार होता है। तब उसके अन्तस में परम सत्य का साक्षात्कार होता है। ऐसी मानव चेतना शक्ति से ओतप्रोत प्राणी समस्त प्राणियों को 'आत्मवत सर्वभूतेषु' देखने लगता है।

'हमारे सत्य सनातन धर्म का विश्लेषण करने पर आत्मा और परमात्मा को अद्वैत माना गया है। वेद,पुराण एवं उपनिषद् आदि शास्त्र हमें परमात्मा की दिव्य एवं अद्भुत ज्योति के दर्शन कराने में सक्षम हैं 'आत्मा अजर-अमर है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी सकल ब्रह्माण्ड में इस सृष्टि के संचालक ईश्वर ही परम सत्य है। समस्त प्राणियों के लिए ईश्वर से सर्वे भवन्तु सुखिन: की मंगलमय प्रार्थना जीवन में उच्च मानवीय मूल्यों को स्थापित करती है।'

'व्यक्ति को सामाजिक, पारिवारिक, आत्मिक जीवन की उन्नति हेतु मानव जीवन में धर्म का पालन करते हुए समस्त प्राणियों से प्रेम भाव का व्यवहार करना आवश्यक है।'

'क्योंकि दया, धर्म, प्रेम,सत्य,जप तप जैसे गुण पुण्य कर्म का आधार होते हैं। और यह पुण्य कर्म ही धर्म का अनुपालन करने वाले व्यक्ति की प्राण चेतना शक्ति को उर्ध्वगामी बनाते हैं। फल की इच्छा को छोड़कर प्रेम से सराबोर निष्काम कर्म जीवन में लौकिक से ऊपर अलौकिक तेज पुंज की ओर ले चलते हैं। तब व्यक्ति की आत्म चेतना शक्ति अंतस में जाग्रत होती है। इसलिए सकल संसार में प्रेम भावना का विस्तार करना हम प्राणियों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।'

'प्रेम भावना के जाग्रत होने से जीवन में दिव्यता आती है। छछिया भर छाछ पर नाचने वाले त्रिलोकीनाथ भगवान

प्रेम भाव के भूखे हैं। प्रेम भाव ही सर्वोच्च जीवन की प्रेरणा है। प्रेम भाव से युक्त व्यक्ति सच्चे कर्मयोगी कहलाते हैं। व्यक्ति जीवन काल में जो भी कर्म करें, ईश्वरीय शक्ति को अर्पण करके कर्म करने से वह कार्य कर्म बंधन का कारण नहीं बनता। बल्कि वह चिन्मय हो जाता है। धर्म संस्कृति का पालन करने वाले व्यक्ति निष्काम भाव से कर्म करते हैं।'

'धर्म-कर्म एवं सत्य सनातन धर्म संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एवं आत्मिक गुणों के वर्धन हेतु साहित्यिक संचेतना मंच का निर्माण किया गया है। इसके संस्थापक आदरणीय नरेन्द्र रावत 'नरेन' जी एवं आदरणीया प्रीति डिमरी 'प्रणया' जी ने जन मानस में धर्म के प्रति प्राण फूँकनें का जो शंखनाद किया है। वह कार्य अति उत्तम एवं प्रशंसनीय कार्य है। आपने समाज में धर्म जागृति करने हेतु साहित्यिक संचेतना पत्रिका प्रकाशित करने का सुन्दर बीड़ा उठाया है। यह आपका प्रशंसनीय एवं सार्थक कदम है। इसके लिए आपको कोटिश बधाई एवं साधुवाद।'

—सीमा गर्ग मंजरी
मौलिक सृजन
मेरठ कैंट उत्तर प्रदेश

'नमो भगवते वासुदेवाय विश्वेस्वराय आदिपुरुष..!'
'अपरम्पार अलेख पुरुषाय नमः..!!'

आधुनिक युग में जिस प्रकार हमारे सामाजिक व सांस्कृतिक प्रयोजनों में संस्कृति व सभ्यता के अनुसरण का हनन हो रहा है, वहीं साहित्यिक सचेतना जो कि एक मंच नहीं अपितु एक ऐसी विचारधारा है जिसे मानवीय जीवन में सनातन सभ्यता व संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु संचालित किया गया है।

सर्वप्रथम! साहित्यिक सचेतना के क्रियान्वन व प्रबन्धन समिति के प्रत्येक सदस्य को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि आप सबने इस मुहिम को जन साधारण के मध्य स्थापित किया जिससे कि युवा शक्ति और भावी पीढी अपनी संस्कृति के प्रोत्साहन व गौरवान्वित जानकारियों से अवगत हो सकें।

साहित्यिक सचेतना के संस्थापक व संचालक आदरणीय श्री नरेन्द्र रावत जी 'नरेन' एवम् प्रीति डिमरी जी 'प्रणया' साहित्य के माध्यम से आपने लेखन में 'सनातन संस्कृति एवम् परम्परा' को संक्षिप्त रूप से व्यापक रूप में परिवर्तन किया जिसमें सहभागी साहित्य प्रेमी अपनी अपनी काव्य कृतियों में भारतीय परम्परा और अनन्त कालीन सभ्यता को सार्थक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस विषय में यही कहना उचित है कि साहित्यिक सचेतना का 'द्वितीय अंक' जो कि भगवान् कृष्ण की बाल लीलाओं, सखा-सखियों, गोप-गोपियों के साथ सृष्टि संचालक भगवान् योगेश्वर का आत्मीय संबंध आज की स्वार्थ भरी मित्रता या अन्य संबंधों पर सार्थक तंज़ कसता है।

प्रस्तुत 'जन्माष्टमी' अंक में मथुरा, गोकुल, ब्रज के हर उस स्थान का अंश समाहित है जहाँ हमारे ठाकुर श्री वृन्दावन बिहारी ने बाल लीलाएँ की और इस शानदार कथन की पुष्टि यह है कि काव्य की रचनाएँ व 'स्वास्तिक पत्रिका के द्वितीय अंक में' समस्त बाल लीलाओं का उल्लेख पाठक वर्ग को 'रचनात्मक रूप में' में पढने को मिलेगा।

साहित्य के आँगन में भक्ति, आस्था, आत्मीय जुडाव, बालपन की निश्छलता और कृष्ण सखा-सखियों के मनोरम दृश्यों का अनुभव रचनात्मक रूप में वर्णित है।

'स्वास्तिक पत्रिका' के सफलतम् यात्रा वृतान्त में शुभकामना के रूप आहुति देते हुए 'प्रीति डिमरी जी' और 'नरेन्द्र

रावत जी' के इस प्रयास को नमन है।

शुभकामना व बधाई प्रेषक।

—डॉ. शशि कान्त पाराशर ''अनमोल''
संस्थापक: सिद्धि—एक उम्मीद महिला साहित्यिक संस्था
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी: साहित्यिक सचेतना एवम् काव्य मंजरी मंच
अध्यापक, कवि और लेखक
मथुरा, उत्तर प्रदेश

स्वास्तिक पत्रिका के संपादक एवं रचनाकारों व सभी पाठको को मेरा प्रणाम एवं आभार कि आप सभी लोग इस पत्रिका के माध्यम से इस कालखंड में मानवी जाती के मानव मूल्य को, बल प्रदान कर रहे हैं मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

—मोहम्मद सैफी

विद्या दायिनी माँ शारदे को नमन करते हुए पावन मंच साहित्यिक सचेतना को मेरा प्रणाम सभी विद्वान जनो को सादर अभिनन्दन...साहित्यिक सचेतना मंच द्वारा जन-जन के अन्दर सत्य, न्याय, पुण्य और सभी के अन्दर बसुधैव कुटुम्बकम की भावना जागृत हो।

साहित्यिक सचेतना मंच द्वारा स्वास्तिक पत्रिका प्रकाशित होने पर मुझे अपार खुशी हो रही है। आशा करती हूँ कि यह पत्रिका जन-जन तक पहुँच कर सभी के अन्दर सकारात्मक भाव विकसित हो। साहित्यिक सचेतना मंच के संचालक आदरणीया प्रीति जी एवं आदरणीय नरेंद्र जी का कार्य उत्तम एवं प्रशंसनीय है।

धन्यवाद।

—दमयंती राणा
गोचर, उत्तराखंड

साहित्य सचेतना संगठन अपने-आप में एक अनूठा संघ है।

सचेतना संघ की नींव सत्य और सर्वहित सिद्धांतों के आधार पर रखी गयी है। संघ ने निश्चय कर यह बीड़ा उठाया है कि देश में ही नहीं विदेशों में भी सत्य और अद्वैत वाद की चेतना जागृत करनी है। अपने देश के साहित्यिक मूल्यों की और सत्य रुपी अद्वैत ज्ञान की सचेतना सभी के मन में जागृत हो, ऐसा संगठन का प्रयास है। संगठन का उद्देश्य अपने कार्य के माध्यम से साहित्य सचेतना का प्रचार और प्रसार करना है।

इसी उद्देश्य से संगठन द्वारा स्वास्तिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिससे संगठन की गतिविधियों द्वारा सचेतना संदेश जन जन तक पहुँचाया जा सके।

साहित्य और साहित्यिक रचनाएँ मन को प्रसन्न करती है और सत् विचारों और सकारात्मक ऊर्जा को मन में विकसित करने में सक्षम होती है। यह पत्रिका सचेतन मन के ज्ञानाकुंर का एक दर्पण है। स्वास्तिक पत्रिका का प्रकाशन संगठन के सामूहिक उद्यम का परिणाम है और इस सराहनीय कार्य के लिए सभी आयोजक गण प्रशंसा के पात्र हैं।

साहित्यिक सचेतना संगठन को नमन कर मैं प्रीति जी और नरेंद्र सर जी का दिल से आभार मानती हूँ कि उन्होंने मुझे इस काबिल समझा और अपने संगठन का सदस्य बना कर कुछ

जिम्मेदारी अपने संस्कारों को विस्तृत करने के लिए निभाने का मौका दिया।

बच्चन सर की यह लाइन इस कार्य को सार्थक स्वरूप देती है।

'सन्नाटा वसुधा पर छाया'
'नभ में हमने कान लगाया।'
'स्वर्ग सुना करता है यह गाना'
'पृथ्वी ने तो बस यह जाना।'
और हमने है मन में ठाना,
देश में सत्य और सचेतना का भाव जगाना।

—शारदा कनोरिया
पूणे, महाराष्ट्रा

साहित्यिक सचेतना समूह द्वारा सनातन धर्म को अनवरत गतिमान रखने की दिशा में स्वास्तिक पत्रिका हिंदी है साहित्य में मील का पत्थर साबित होगी। इसमें जिन साहित्यिक साहित्य प्रेमियों के लेख और कविताएँ उद्धृत हैं कहीं ना कहीं यह अद्वैतवाद को मानते हुए परमात्मा की सत्यता को स्वीकार करते हैं। पत्रिका के निर्बाध रूप से गतिमान रहने के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ।

—सरोज डिमरी
चमोली उत्तराखंड

श्री गणेशाय नमः
मंच को सादर नमन!

माँ आदिशक्ति की कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद से साहित्यिक सचेतना परिवार अपनी मासिक पत्रिका ''स्वास्तिक'' का दूसरा अंक ''श्री कृष्ण जन्माष्टमी'' विशेषांक का प्रकाशन करने जा रहा है। ''स्वास्तिक'' पत्रिका का प्रथम अंक ''स्वतंत्रता विशेषांक'' था जिसका सभी पाठकों ने हार्दिक स्वागत और सराहना की, जिससे सभी सचेतन साहित्यकारों में नव उमंग और उत्साह का संचार हुआ। आपके प्यार और सहयोग के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ। और आशा करती हूँ कि ''स्वास्तिक पत्रिका'' के इस अंक का भी आप हार्दिक स्वागत करेंगे। मैं आशा करती हूँ कि, साहित्यिक सचेतना के संस्थापक आदरणीय नरेंद्र जी एवं संचालिका आदरणीया प्रीति जी की सही सोच, उचित मार्गदर्शन और माँ शारदे की कृपा से सबकी कलम सदा चलती रहे। हमारी यह ''स्वास्तिक'' पत्रिका नव आयामों को छूती रहे, विश्व में ''स्वास्तिक'' पत्रिका अपना परचम लहराती रहे सदा शुभ हो,सदा मंगलमय हो, यहीं मेरी शुभकामनाएँ हैं। अंत में कुछ पंक्तियाँ स्वास्तिक के नाम—

स्वास्तिक नाम करे जो रोशन,
शुभता जो हर मन में लाएगी।
परमात्मा का संदेश लेकर,
यही हर कोने -कोने जाएगी।
गणेश जी का प्रतीक है यह,
सकारात्मकता फैलाएगी।

सत्य की राह पर चलकर,
ही तो यह चेतना जगाएगी।।

धन्यवाद।

—विजया सजवाण
चमोली, उत्तराखंड

यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि सहित्यिक सचेतना कि ''स्वास्तिक पत्रिका'' के अगस्त माह कि सफलतापूर्वक प्रकाशन हुआ, इसी सफलता को देखते हुए सितम्बर माह के द्वितीय अंक कि सफलता के लिए हार्दिक शुभकामना प्रेषित करना चाहती हूँ।

सहित्यिक सचेतना मंच वैदिक सनातन एवं अद्वैत् दर्शन पर आधारित ''चिरपुरातन से नितनवीनता कि ओर'' एक ऐसा मंच है जो हमारे सनातन से सम्बन्धित सत,असत, त्रिगुण, और प्रकृति से संबंधित समस्त तथ्यों का ज्ञान कराती है।

जीवन क्षणभंगूर है,जो इस जीवन के सत और जन लेता है वो मोक्ष के द्वार को प्राप्त क लेता है।

सनातन अर्थात शाश्वत। जिसका ना तो आदि है और ना ही अंत है। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश,वायु इन पंचमहाभूतों से निर्मित हमारा शरीर इन्ही में विलीन हो जाता है। यही शाश्वत सत्य है।

सत्य, प्रेम, एवं न्याय कि भाषा को जन जन तक परिभाषित करने के लिए आ. नरेन् रावत जी द्वारा इस मंच का निर्माण किया गया, और साथ ही साथ आ. प्रीति डिमरी ''प्रणया'' जी द्वारा इस प्रयास और कार्य को विस्तार दिया जा रहा है।

सनातन है तो इसमे कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सहित्यिक सचेतना मंच के द्वारा प्रेम, न्याय, सत्य, और जीवन में समझना और उतरना और एक जागरूक प्रयास है।

नई पीढ़ी दिशाहीन होती जा रही है, अनेक मत-मतान्तर चल पड़े हैं, समाज गुमराह हो रहा है, अपनी भाषा, अपनी सभ्यता, रहन-सहन, रीति-रिवाज, पहनावा और पर्व, इन सबको नहीं भूलना चाहिए। इन सब बातों को मिलाने से किसी राष्ट्र की संस्कृति बना करती है। अपने पूर्वजों, से चला आ रहा, जो धर्म है उसे नहीं बदलना चाहिए। परम सत्य एक है, उसे विविध रूपों से कहा गया है, उस पर आस्था और विश्वास होना चाहिए, इन सब बातों की प्रेरणा इस पत्रिका से मिल सकती है। इसमें ऐसा सार मर्मित और सम्मोहक लेख हैं, कि मानव मन पर छाप छोड़ जाते हैं।

साज-सज्जा, सफाई और छपाई, सम्पादन कला सर्वोत्तम है। समाज को सही दिशा देने वाले इस स्वास्तिक पत्रिका का उत्थान हुआ है, यह जान कर प्रसन्नता हुई है। ज्ञान-संवर्धन के लिए इसका अनुशीलन करना चाहिए।

सहित्यिक सचेतना मंच कि स्वास्तिक पत्रिका को आप सब का स्नेह मिलता रहे,इसी आशा के साथ......

—उर्मिला पपनोई
गुरुग्राम, उत्तराखंड (स्यालदे)

मन के भाव

साहित्य संचेतना मंच के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में सनातन धर्म के प्रति सभी को जागरूक करने के लिए नित्य नए कार्य किया जा रहे हैं। इसका श्रेय हम नरेंद्र जी को देते हुए उनके बारे में बस यही कहना चाहूँगी कि सनातन धर्म एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साहित्यिक संचेतना मंच का निर्माण संस्थापक आदरणीय नरेंद्र रावत 'नरेंन' जी एवं प्रीति डिमरी जी के सहयोग से हुआ है। इस मंच पर दिन प्रतिदिन संस्कृत एवं धर्म से जुड़े नए विषय पर देश के सम्मानित

साहित्यकारों के माध्यम से व्हाट्सएप समूह एवं फेसबुक समूह के माध्यम से आयोजन किया जा रहे हैं, एवं काव्य गोष्टी भी की जाती है। बहुत ही कम समय में इस मंच के माध्यम से हम सभी के बीच सनातन धर्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'स्वास्तिक' पत्रिका को प्रकाशित किया गया।

इसका प्रकाशन स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शानदार विमोचन के माध्यम से किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़कर साहित्यकारों ने अपना स्नेह एवं आशीर्वाद देते हुए इस पत्रिका की सराहना की। इसी प्रकार से मैं भी संदेश के माध्यम से यही कहना चाहूँगी कि वास्तव में यह पत्रिका सनातन धर्म को बढ़ावा देने में कारगर साबित होगी।

कुछ भाव मंच एवं पत्रिका के लिए मेरे मन में आया जो मैं आप सभी के समक्ष पंक्तियों के माध्यम से रख रही हूँ...

'यही उद्देश्य साहित्य संचेतना की-
मिले सनातन धर्म को बढ़ावा!
स्वास्तिक छाप हो हर घर-
मिले संस्कृति को साहित्य से बढ़ावा!
शुचि भाव बसे हृदय-
जन-जन को मिले नैतिकता का संदेश।'

—डॉ. माधवी मिश्रा 'शुचि'
बनारस, उत्तर प्रदेश

'विघ्नहर्ता गणेश जी को वंदन'
'माँ शारदे को चरणस्पर्श'
'राधे-राधे ' श्री कृष्णाय शरणं मम्।'
'पावन मंच एवं कार्यकारिणी को नमन'
'प्रिय पाठकों को दिली प्रणाम'
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

भगवान श्री कृष्ण श्रीमद्‌भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में श्लोक संख्या 21 के माध्यम से बताते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण यानी जो-जो कार्य करते हैं, दूसरे मनुष्य (आम इंसान) भी वैसा ही आचरण, वैसा ही काम करते हैं। श्रेष्ठ पुरुष जो प्रमाण या उदाहरण दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करते हैं, समस्त मानव-समुदाय उसी का अनुसरण करने लग जाते हैं। जिससे समस्त संसार का कल्याण होता है।

इस श्लोक के असल मर्म को साहित्यिक सचेतना मंच द्वारा कार्यान्वित किया गया है। स्वास्तिक मासिक पत्रिका के प्रथम अंक जो कि (स्वतंत्रता विशेषांक) पर आधारित था के सफल विमोचन के लिए 'मंच के संस्थापक श्री नरेंद्र रावत नरेन् जी एवं मंच सचिव आदरणीया प्रीति डिमरी जी' और मंच से जुड़े सभी साहित्यकारों/पाठकों/कार्यकारिणी सदस्यों को 'हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।'

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'माँ शारदे' की असीम कृपा व आशीर्वाद के फ्लस्वरूप अद्वैतदर्शन आधारित भारतीय 'वैदिक सनातनधर्म' की स्थापना के लिए संकल्पित 'साहित्यिक सचेतना' मंच द्वारा अपनी 'स्वास्तिक मासिक पत्रिका' का दूसरा अंक प्रकाशित किया गया है जो कि 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक' पर आधारित है।

'आशा, पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं' इस अनूठी

पहल (मासिक पत्रिका) के माध्यम से साहित्यिक सचेतना पटल अपने सर्वहित, सर्व कल्याण, सर्व मंगलकारी उद्देश्यों जैसे—भारतीय चिरपुरातन एवं नितनूतन सत् सिद्धांत के ढाई-ढाई अक्षरों वाले 'धर्म' के चारों चरणों—सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य' पर अनेकों विधाओं में सत्यात्मक एवं सकारात्मक रचनाओं के सृजन एवं पठन के लिए अधिक से अधिक साहित्य प्रेमियों, सत्यपथ गामियों को जोड़ना इत्यादि को साकार कर सकें।

अन्ततः इस अनूठी पहल व स्वास्तिक पत्रिका के विमोचन में 'मुझ जैसे अबोध को परिवार का अभिन्न अंग (कार्यकारिणी सदस्य) बनाने हेतु आपको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।'

''मेरा सबसे अच्छा दोस्त वह व्यक्ति है जो मुझे वह किताब देगा जो मैंने नहीं पढ़ी है'' **—अब्राहम लिंकन**

शुभकामनाओं सहित...

—चंदेल साहिब
साहित्यिक सचेतना मंच
हिमाचल प्रदेश अध्यक्ष।

साहित्य सचेतना संगठन रूपी एक नए सूर्य का उदय हुआ है।

मन बहुत हर्षित हुआ हैं।

साहित्य संचेतना संगठन अपने नाम के अनुरूप ही अद्वैतवाद की चेतना फैलाने का काम कर रहा है।

संगठन द्वारा प्रकाशित स्वास्तिक पत्रिका एक सराहनीय प्रयास है इसमें प्रकाशित रचनाएँ सभी के मन में प्रसन्नता का और ज्ञान का संचार करती है

मैं प्रीति जी, नरेंद्र जी और संगठन की आभारी हूँ की उन्होंने मुझे कार्यकारिणी का सदस्य बनाया है। मैं आशा करती हूँ कि साहित्यिक संचेतना के माध्यम से हम एक नया अध्याय लिखेंगे।

साहित्य मूल्यों की रश्मियों से विश्व को प्रकाशित करेंगे।

—जयश्री सिंहल
(हैप्पीनेस एक्सप्लोरर)

ऊँ शारदाये नमो नमः

पंचतत्वों से निर्मित मानव देह मे परमतत्व परमात्मा विराजमान होते हैं, जो जीव के दैहिक स्वरूप का संचालन उसके पूर्वजन्म कृत कार्यों के अनुरूप तथा समर्थ होने पर इस जन्म में किये जाने वाले प्रयासों के फलस्वरूप अच्छा या बुरा प्रतिफल देते हैं। जीवन की इसी सत्यता को प्रकट करने तथा जीव के सर्वांगीण सविकास हेतु साहित्य सचेतना की स्वास्तिक पत्रिका सर्वोत्तम प्रयासरत है। यह जन-जन के मन को हर्षाने वाली एवं प्रमुदित जीवन कला सिखाने वाली पत्रिका बनने जा रही है! सदाचारी संयमित चरमोत्कर्ष पथ दर्शाने वाली स्वास्तिक पत्रिका के संयोजक-मंडल की जितनी भी भूरि-भूरि प्रशंसा की जाय वह कम है।

सत्चेतना के पैगाम को लिए विश्व पटल पर प्रस्फुटित होने के लिए स्वास्तिक 'शिशुपत्रिका' हेतु हार्दिक मंगल कामनाएँ एवं शुधि पाठकों के मंगलमय आनन्दमय जीवन हेतु सच्चिदानन्द प्रभु से विनय, सर्वे जता सुखिना भवन्तु।

—यशोदा मैठाणी 'यशु'
शिक्षिका
नत्थूवाला देहरादून उत्तराखंड

साहित्यिक सचेतना कार्यकारिणी पदाधिकारी

नरेंद्र रावत 'नरेन'
(राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संस्थापक)

प्रीति डिमरी 'प्रणया'
(राष्ट्रीय सचिव एवं संचालिका)

गीता तिवारी
(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

आशुतोष जायसवाल
(राष्ट्रीय संरक्षक)

शारदा कानोरिया
(राष्ट्रीय प्रभारी)

शशिकान्त पराशर 'अनमोल'
(राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी)

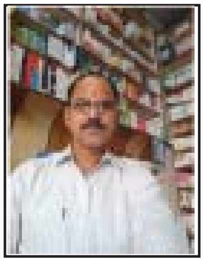

लक्ष्मण रावत
(राष्ट्रीय संगठनमन्त्री)

सतीश तिवारी
(राष्ट्रीय सलाहकार)

सरोज डिमरी
(प्रदेश प्रभारी उत्तराखंड)

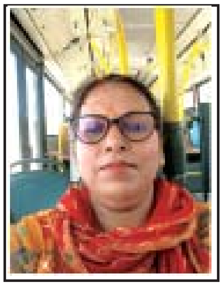

विजिया सजवाण
(प्रदेश सहप्रभारी उत्तराखंड)

दमयंती राणा
(प्रदेश मीडिया प्रभारी उत्तराखंड)

नीलिमा शर्मा 'नित्या'
(प्रदेश प्रभारी राजस्थान)

साहित्यिक सचेतना कार्यकारिणी पदाधिकारी

बन्दना गुप्ता (राष्ट्रीय प्रभारी कनाडा
एवं प्रदेश प्रभारी पश्चिम बंगाल)

प्रवीणा पगारे
(प्रदेश प्रभारी मध्यप्रदेश)

शशिकला व्यास 'शिल्पी'
(प्रदेश सहप्रभारी मध्यप्रदेश)

जया विलतकर
(मीडिया प्रभारी मध्यप्रदेश)

अनुराधा द्विवेदी 'अनुश्री'
(प्रदेश प्रभारी छत्तीसगढ़)

रेखा तिवारी 'कुमुद'
(प्रदेश सहप्रभारी छत्तीसग)

मीनाक्षी भास्कर
(प्रदेश प्रभारी पंजाब)

चन्देल साहिब
(प्रदेश प्रभारी हिमाचल प्रदेश)

जुगलकिशोर त्रिपाठी
(प्रदेश प्रभारी उत्तरप्रदेश)

मनोज भंडारी
(प्रदेश प्रभारी हरियाणा)

उर्मिला पपनोई
(प्रदेश सहप्रभारी हरियाणा)

◆ वन्दना

गणेश वंदना

गणपति गजानन प्यारे
गणपति गजानन प्यारे,
पूर्ण करो सब काज हमारे।
हमको ऐसा वरदान दे दो,
खाली झोली खुशियों से भर दो।।

रिद्धि सिद्धि के तुम दाता,
शरण जो आए खाली न जाता।
मूषक की प्रभु करते सवारी,
गाती है महिमा दुनिया सारी।।

लक्ष्मी सरस्वती संग पधारो,
दीन-दुखियों के कष्ट उबारो।
करुणा के हो तुम-अवतारी,
तेरे चरणों में जाऊँ बलिहारी।।

चंदेल साहिब

शंकर के हो तुम दुलारे,
गौरी के नन्दन अदभुत प्यारे।
भक्तों के हो तुम विधाता,
पूर्ण करते हो सबकी आशा।।

लडडुअन का जो भोग लगाते,
कष्ट सारे पल में छट जाते।
शत्रु भी कुछ न बिगाड़ पाते,
सर्वकार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाते।।

गणपति गजानन प्यारे,
पूर्ण करो सब काज हमारे।
हमको ऐसा वरदान दे दो,
खाली झोली खुशियों से भर दो।।

—चंदेल साहिब
साहित्यिक सचेतना

◆ सरस्वती वन्दना

हे ज्ञान की देवी

विजया सजवाण

हे ज्ञान की देवी माँ,
ज्ञान प्रकाश फैला दो।
ज्ञान की सरिता बहती रहे,
कृपा कुछ ऐसे ही करें दो।।

ब्रह्म अर्धांगिनी हो माँ,
सब पूजा करें तुम्हारी।
सत्य सनातन रूप में आओ,
स्वीकार करो अर्ज हमारी।।

श्वेत वस्त्र धारण किए माँ,
कमल बनाया है आसन।
हंस पर आरूढ़ हो आ जाओ,
सबके मन पर कर दो शासन।

बसंत पंचमी दिन शुभ हुआ,
तेरा जन्म दिवस मनाते हैं
करके तेरी पूजा माँ,
सद्बुद्धि का वरदान माँगते हैं।।

बजा बजा वीणा माँ,
तुम मुझे रोज रिझातीं हो।
गा -गाकर बंदना में तेरी,
आ जाओ माँ तुझे बुलाती हूँ।।

श्वेत पीला रंग तुझको भाया,
तू अक्षरों की आधार,
अक्षर अक्षर में भरकर
माँ तूने मिटाया है अन्धकार।।

सौम्य रूप में तू आजा
करके वाणी का श्रृंगार।
विदुषी बनकर कर दो माँ,
सबके जीवन का उद्धार।।

—विजया सजवाण
(उत्तराखंड)

◆ भावपल्लवन—लेख

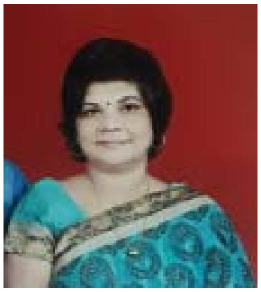

रेखा तिवारी 'कुमुद'

माँ शारदे को नमन

भाव-पल्लवन—मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।

"मन के हारे हार है,मन के जीते जीत" मन की उर्जित शक्ति का दुरुपयोग और सदुपयोग कैसे हो ईस सत्य का चिन्तन करने के लिये यह वाक्य प्रेरित करता है।

मन की शक्ति को कौन नहीं जानता नारद जी मन की गति से चलकर त्रैलोक्य भ्रमण रोज कर लेते थे। हम भी जैसी भी कल्पना करें उस लोक में मन की गति से पहुँच जाते है।तभी लोक कथाएँ से लेकर धर्मग्रन्थों के लोक नायक चाहे-अनचाहे आज भी हमारे मन को प्रभावित कर दिशावान बनाते हैं।

फिर भी क्या कारण है कि संस्कार गत मान्यताएँ, कम्प्यूटर वाद की दुनिया में जीकर भी लोग मनोबल के लिये हार-जीत का खेल करते हैं। और अंत में सुख-दुख,मान-अपमान, प्रारब्ध-भाग्यवाद की लकीरें पीटते अपने आपको सदैव दूसरो की तुलना में कम समझ या तो प्रतिस्पर्धा करके या दीन-हीन बनकर अपनी वैचारिक और भावनात्मक स्तर को कमजोर बनाते हैं।

सबसे पहले मन का चिन्तन करते हैं कि यह हैं क्या? मन एक स्वस्थ भाव प्रणाली है जिसमे खुशी और आनंद का स्त्रोत भरा है। यदि प्रायोगिक परीक्षण करना चाहें तो नवजात बच्चा भी मुस्कराता है। सिर्फ भूख लगने पर रोता है।जब धीरे-धीरे बड़ा होता है तो अपने आस-पास की हर चीजो को देखकर वह जिज्ञासा से भर हर चीज के हिलने-डुलने की प्रतिक्रिया मात्र से खुशी से किलकारी लेता है। जिन्दा सांप से भी उसे भय नहीं लगता। यहीं निर्भय मन यदि जीवन्त पर्यन्त भोला, सरल, जिज्ञासु और जुझारू रहें तो

ऋषि–मुनि स्तर के वैज्ञानिक विश्व वसुधा को देकर षड्चक्रों का ज्ञानकोश देकर विश्व को चमत्कृत कर देते है।अन्यथा प्रतिभाशाली वर्ग आज जितने भी सुविधाभोगी संसाधन बनाएँ वह सिर्फ बौद्धिक कम्प्यूटर की राजनीति बना हर मनुष्य को मनोबल रहित ही बना रहे। मनुष्य का सफर बचपन के निर्भीकता से शुरू होकर बुढ़ापे तक आते आते अवसाद और मनोबल रहित होने की एकल दुनिया में कैद हो गया। क्यों कि मन की नैसर्गिक आवश्यक तो प्रार्थना को हम भूल बैठे। और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का तो अब चिन्तन ही नहीं करना चाहते है।जबकि शरीरगत क्रिया प्रणाली से लेकर सृष्टि चक्र ईसा सहकार भावना से अपने कर्तव्य पथ पर आरूढ़ है।

मन की अपरिमित शक्ति में विचारो की सृजनात्मक शक्ति है जिसकी विवेक रूपी सरस्वती धार को संकल्प शक्ति के द्वारा सधा कर असंभव दिखने वाले कार्य किये जा सकते है। अब प्रश्न उठता है कि संकल्प को सधाएँ कैसे? नित्य ही हमारे मानस–पटल पर सकारात्मक और नकारात्मक विचारों की ऑधी चलती हैं। ईसा बिना सोचे समझे यूँ ही जाने देवेगें तो मन कोल्हू का बैल बन ईन्द्रियो की गुलामी की जंजीरो में जकड़ कर पेट–प्रजनन की पशुवत योनि में जियेगा।सो सबसे पहले विचारों की खरपतवार की आँधी उठेगी उसी समय मन को सूर्यदेवता या आत्मदेव ज्योति ध्यान में विलीन होने की कोशिश करें धीरे–धीरे आपके भीतर के वे विचार जो आपको परेशान या प्रोत्साहित कर रहे हैं उसी पर ध्यान टिकेगा यदि विचार नकारात्मक है तो उसे सकारात्मक विचारों से परास्त कीजिये। यदि प्रोत्साहित करने वाले विचार हैं तो अपनी बौद्धिक, वैचारिक, शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति का जायजा लेकर अपने संकल्प को पुरुषार्थी बनाने में जुट जाएँ। अब सोचने लायक बात ये हैं कि मनुज शरीर में सुर–असुर दोनों की शक्तियाँ बराबर है अपने संकल्प से हम मनोवांछित शक्तियाँ अर्जित करके देश के कर्णधार या ऑतकवादी भी बन सकते हैं। सो संस्कार की विद्या रूपी धरोहर मतलब सतोगुणी शक्तियों के जागरण के लिये भी खान–पान की सावधानी बरतें। तामसिक आहार विहार अंत में अंहकार जनित प्रतिभा तो पैदा कर देगा और विश्व रूस यूक्रेन लडाई जैसे मूढ़, संवेदनविहीन मानसिकता के कठघरे में सिर्फ बौद्धिक पतन ही करवा कर सामान्य जन के लिये किंकर्त्तव्य स्थिति ला देगा।क्योंकि छोटे स्वरूप में हर दिल का महाभारत अपने ही भाई–भाई के बीच लड़ाई करके उपभोक्तावाद संस्कृति के दलदल में जा रहा है। सो मन की अपरिमित शक्ति को अक्षुण्ण बनाएँ रखने के लिये श्रेष्ठ पुस्तकों को जिसमे नैतिक चरित्र गठन से लेकर शौर्य,पुरुषार्थ और ज्ञान–विज्ञान के महारथी उपवन बनते हो उसको सच्चा मित्र समझ कर नित्य स्वाध्याय करें। ये मार्गदर्शित प्रेरणा आपको कभी जिन्दगी के भवसागर में गिरने नहीं देगी। दुख–सुख,मान–अपमान के थपेड़े आपके मन को अनुभव जन्य बनाकर मजबूत करेंगे।

मन के हार मान लेने से बाहरी मनोभूमि के लोग हमें प्रभावित करते हैं और हम भी भीड़ की राजनीति का हिस्सा बन जाते हैं।

मन के जीतने से आप स्वयं तो सुखी–संतोषी होवेंगे साथ ही अपने आस –पास भी सुरभित–पल्लवित वातावरण पैदा करेंगे। संकल्प सदैव छोटे होने चाहिये जिसे अपनी मुट्ठी भर क्षमता से कर लेने से बड़े संकल्प भी सधनै लगते है। जब आप मनोवांछित लक्ष्य तक पहुँच जाएँगे तब परमार्थ का विवेक सम्मत कोई कार्य निष्काम ह्दय से कीजिये। आपका धन और प्रतिभा का थोड़ा अंश ईसमे लगेगा और यहीं चीज ईश्वर के बैंक एकाउन्ट में जब जमा होगा तब विपरीत परिस्थितियों में अचानक ही मददगार लोग आयेगे। मन को सधाना आसान काम नहीं इसके लिये सतत् आत्मपरीक्षण और आत्मसुधार की जरूरत होती हैं। अपनी पैनी नजर से मन के कषाय कल्मष आप धोते रहिये। शिक्षा आपके व्यक्तित्व को चार चाँद लगाती है। लेकिन मन से हारा हुआ आदमी जब निस्तेज और परेशान दिखता है या प्रतिभा प्रखरता लिये हुए अंहकार दिखती है तब मन हजारो प्रश्नो को थामे हुए आज मनोचिकित्सक के कारागार में भेज दिया जाता है।कैसा त्रासदी का युग आ गया है कि आज मनोरोगी की समस्या विकराल हो रहीं है। हम मन के नैसर्गिक सौन्दर्य को समझ ओंकारेजन्य अपनी धड़कन की आवाज को सुनने की कोशिश करें तो मन की इंद्रियाँ फिर से चैतन्य शक्ति बन हमे मन वचन कर्म से महान बना सकतीं हैं।

—रेखा तिवारी 'कुमुद'

अद्वैतदर्शन आधारित सनातन धर्मसिद्धांत

नरेंद्र रावत 'नरेन'

स और त का योग ही सत् है। स ही सन: अथवा सनोती है जिसे आधार कहा जाता है। त और न का योग तन है। त ही तन: अथवा तनोती है जिसे विस्तार कहा गया है। सन:+तन: को ही 'सनातन' कहते हैं। स ही अद एवं त ही इदम/इति है। इस प्रकार आधार और विस्ताए, यह और वह, अथ और अंत, आदि और अंत, पिता और पुत्र, ब्रह्मा और ब्रह्माण्ड, मैं और तु आदि व्यर्थ द्वन्द तत्त्वत एवं आत्मत एक ही हैं, अद्वैत है, जगत में दुसरा कोई और नहीं बल्कि सभी एक ही हैं।

सन+तान ही संतान अथवा पिता ही पुत्र हुआ है। आइंस्टिन का प्रसिद्ध सूत्र $E = mc^2$ भी यह सिद्ध करता है कि ब्रह्माण्ड में व्याप्त अमाप्य ऊर्जा ही सघन होकर पदार्थ बनती है अथवा पदार्थ को भी ऊर्जा में परिवर्तन किया जा सकता है। अर्थात ऊर्जारूपी आधार ही पदार्थरूपी विस्तृत जगत हुआ है। डार्विन का विकासवाद सिद्धांत भी यह सिद्ध करता है कि जड़पदार्थ से वृक्ष वनस्पति, वनस्पति से जीवजंतु, जीवजंतु से मनुष्य और किसी एक मनुष्य से अनेकों मनुष्यों की उत्तपत्ति हुई है। ज्ञानविज्ञान, शोधों, अनुसन्धानों आदि निष्कर्ष से अंतिम सिद्ध हुई सैद्धांतिक (अंतिम रूप से सिद्ध) बात को ही सत् कहते हैं। उपरोक्त विवेचनााओं से सिद्ध होता है कि अंनत एवं असीम ब्रह्माण्ड में उपस्थित गलेक्सीयाँ, तारे, ग्रह, पिंड, उपग्रह, पदार्थ, वृक्षवनस्पति, जीवजंतु और मनुष्य आदि सभी एक (अद्वैत) ही हैं दूसरा (द्वैत) कोई नहीं। इसी एकत्व का सर्वत्व अथवा सर्वत्व का एकत्व ज्ञान को 'अद्वैत' कहते हैं।

अद्वैत, दर्शन, ज्ञान, विवेक, सिद्धांत, आत्मा एवं सचेतना आदि सभी सकारात्मक शब्दों को सत अथवा सत् सनातन धर्मसिद्धांत कहा जाता है।

चतुष्पातिक स्वास्तिक चिन्ह ही सनातन धर्मसिद्धांत का प्रतीक है, धर्मचिन्ह है। स्वास्तिक चिन्ह के चार आयाम ही धर्म के चतुष्पात हैं, जो सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलयुग रूपी सुदर्शनचक्र को दर्शाते हैं। सनातन व्यवस्था का सार्वभौमिक एवं सर्वहितकारी उद्देश्य व्यक्ति में सत्यस्वरूप, परिवार में प्रेमसंबंध, समाज में न्यायविधान, समष्टि में पुण्यप्रकृति की स्थापना कर समाज एवं राष्ट्र में सतयुगीन वातावरण बनाये रखना है।

सनातन व्यवस्था में मानवजीवन विकास के चार पुरुषार्थ धर्म– अर्थ– काम– मोक्ष प्राप्त करने हेतु चार आयामी आश्रम व्यवस्था क्रमशः ब्रह्मचर्य–गृहस्थ–वानप्रस्थ–सन्यास प्रतिष्ठित हैं। सनातन आश्रमो को प्रतिष्ठत करने हेतू क्रमशः विद्यारम्भ, विवाह, उपनयन, अंतयेष्टि चार संस्कार प्रतिष्ठित हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में सम्पूर्ण 25 वर्षीय शिक्षण एवं रोजगार हेतू प्रशिक्षण कर सतगुण प्राप्त करना होता है। गृहस्थ आश्रम में प्रेमपूर्वक पारिवारिक जीवन जीना एवं सन्तति पालन कर पितृऋण चुकाया जाता है। वानप्रस्थ आश्रम में समाज मे सत्ज्ञान का प्रसार कर ऋषिऋण चुकाया जाता है। सन्यास आश्रम में धर्म प्रचार कर देव ऋण चुकाया जाता है। चारों आश्रमों को पूर्ण करने के बाद देवता पुर्णतः ऋणमुक्त होते हैं क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन ही सर्वहितकारी होता है।

सनातन सभ्यता के कार्य चार वर्णों/क्षमताओं शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण द्वारा व्यवस्थित होते हैं जिसमें क्षमतानुसार पात्रता, पात्रतानुसार कर्म, कर्मानुसार पद, पदानुसार संपति के न्यायोचित वितरण की व्यवस्था होती है। सनातन व्यवस्था में क्षमतानुसार अथवा योग्यतानुसार वर्ण निश्चित होता है।

'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।'

तन, मन, प्राण एवं आत्मा मनुष्य के चार ही आयाम होते हैं। मनुष्य के तन से शारीरिक क्षमता उत्पन्न होती है जिसे 'शूद्रवर्ण' कहा जाता है। मनुष्य के मन से मानसिक क्षमता उत्पन्न होती है जिसे 'वैश्यवर्ण' कहा जाता है। मनुष्य के प्राण से भावनात्मक क्षमता उत्पन्न होती है जिसे 'क्षत्रियवर्ण' कहा जाता है। मनुष्य के आत्मा से चेतनात्मक क्षमता उत्पन्न होती है जिसे 'ब्राह्मणवर्ण' कहा जाता है।

किसी भी मनुष्य में चारों वर्णों अथवा योग्यताओं में से एक वर्ण प्रभावी रहता है, प्रभावी योग्यता अथवा वर्ण ही उसकी उपाधि शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय एवं ब्राह्मण के रूप में निश्चित करता है। सनातन सतयुगीन व्यवस्था शूद्रवर्ण को आजीविका के लिए 'कृषकपद' के निर्वहन हेतु संसाधन के रूप में 'निःशुल्कभूमि' उपलब्ध करता है। वैश्यवर्ण को आजीविका के लिए 'वणिकपद' के निर्वहन हेतु संसाधन के रूप में 'निर्ब्याजमुद्रा' उपलब्ध करता है। क्षत्रियवर्ण को आजीविका के लिए 'सेवकपद' के निर्वहन हेतु संसाधन के रूप में 'प्रशासनिक सेवा में समानवेतन' उपलब्ध करता है। ब्राह्मणवर्ण को आजीविका के लिए 'नायकपद' के निर्वहन हेतु संसाधन के रूप में 'शासन नेतृत्व के लिए नेतृत्वभत्ता' उपलब्ध करता है। सनातन सतयुगीन व्यवस्था में चारों वर्णों को क्षमतानुसार पात्रता, पात्रतानुसार कर्म, कर्मानुसार पद, पदानुसार संसाधन वितरण की व्यवस्था को ही 'वर्णव्यवस्था' कहा जाता है।

सनातन एक सत्यात्मक व्यवस्था है। जिसे जीवन में स्वीकार करना ही उद्धारक है। सनातन से संबंधित ऐसी ही विस्तृत जानकारी के लिए मिलते हैं अगले अंक में अगले लेख के साथ।

तब तक स्वास्तिक के साथ जुड़कर सनातन को जाने, समझे, और सनातन के प्रसार के लिए कार्य करें।

ऊँ तत् सत्।

'मैत्री संस्थापको यश च विश्वशांति विधायकः'
'सनातनाय धर्माय तस्मे नित्यम नमो नमः'

विश्वबंधुत्व की स्थापना एवं विश्वशान्ति का विधान बनाने वाले सनातन धर्म को बारंबार नमन् है।

—नरेंद्र रावत 'नरेन'
संस्थापक/अध्यक्ष
साहित्यिक सचेतना एवं स्वास्तिक पत्रिका

◆ दार्शनिक आलेख

पंचदोष (कारण एवं निवारण)

मानव जीवन चार आयामी है। तन, मन, प्राण, आत्मा,और यह जीवन पंच पदार्थों से निर्मित है—आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी। इन पंचतत्वों के प्रभाव के कारण बुद्धि में दुर्ज्ञान वश पंच दोष उत्पन्न होते हैं। यह पंच दोष व्यक्ति को पूर्ण रूप से दूषित कर डालते हैं। ह्दय में प्रेम का जन्म नहीं होने देते। जिस कारण व्यक्ति में स्वीकार भाव की कमी आ जाती है स्वीकार भाव ना कर पाने की स्थिति में वह 'पर' से ग्रसित रहता है हर दूसरे में पर की अनुभूति करता है।

आकाश तत्व के प्रभाव से दम्भ, वायु से द्वेष, अग्नि से दाह, जल से दस्युता एवं पृथ्वी तत्व के प्रभाव से द्रोह रूपी पंच दोष उत्पन्न होते हैं। सत्ज्ञान के अभाव में बुद्धि में दुर्ज्ञान उत्पन्न होता है। इन पंच दोषों के कारण व्यक्ति दुर्गुणों से पूरित हो जाता है।

दूसरों का दमन करने की स्थिति ही दंभ है।
दूसरों से हर वक्त लड़ने का भाव ही द्वेष है।
दूसरों से ईर्ष्या करने का भाव ही दाह है।

दूसरों को लूटने की इच्छा करना ही दस्युता है और दूसरों से घृणा या नफरत करना ही द्रोह है।

इन पंच दोषों के कारण व्यक्तित्व बुरी तरह प्रभावित होता है। इन पंच दोषों से मुक्ति का उपाय केवल सत्ज्ञान है। भारतीय अद्वैत दर्शन तथा सनातन सिद्धांत व्यक्ति को निरंतर इन पंच दोषों से मुक्त करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

सत्ज्ञान से ही व्यक्ति आत्मा को जानकर स्व से सर्व होने लगता है। ह्दय से पर का भाव मिटने लगता है। सत्ज्ञान द्वारा ह्दय में प्रेम की अनुभूति होती है जो स्वीकार भाव को बढ़ाता है।

साहित्यिक सचेतना इस दिशा में सार्थक पहल कर रहा है। आइए साहित्यिक सचेतना के साथ जुड़कर स्वयं का परिष्कार करें। मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार का परिष्कार कर अपने व्यक्तित्व को नवीन दिशा प्रदान करें।

—प्रीति डिमरी 'प्रणया'
सचिव/संपादिका
साहित्यिक सचेतना एवं स्वास्तिक पत्रिका

प्रीति डिमरी 'प्रणया'

◆ जन्माष्टमी विशेष कविताएँ

कृष्ण जन्म उत्सव

सांवरे सलोने यशोदा के लाला
कृष्ण कन्हैया मुरली वाला
जन्माष्टमी का दिन बड़ा निराला
इस दिन जन्मे यशोदा के लाला
घर घर बट रही मिठाई
मंदिर मंदिर गावे बधाई
ब्रज में शोर है अति भारी

क्योंकि आ गये कृष्ण कन्हैया बंसीधारी
घर घर में बाजे शहनाई
कान्हा की खुशी में नंद उत्सव मैं भीड़ उमड़ आई

घर मंदिर में नंद उत्सव चल रहे हैं
सब बृजवासी खूब झूम रहे हैं
कृष्ण छठी छोचक।
मंगवा रहे हैं
ऐसी अद्‌भुत लीलाओं को बृजवासी हर वर्ष अत
उत्सव मना रहे हैं

—योगेश्वरी भारद्वाज
कोसीकला
मथुरा उत्तर प्रदेश

योगेश्वरी भारद्वाज

नमन माँ शारदे

जन्माष्टमी

शारदा कनोरिया

जन्माष्टमी का त्यौहार है आया,
चारों और उत्सव अद्‌भुत छाया।
जन्म लिया कंस कारागार में,
पल रहे नंदलाला बिरज में।

रात अंधियारी कारी,
जन्मे जब कृष्ण मुरारी।
गीत गा रहे ब्रज वासी,
कान्हा दिखाये लीलाएँ सारी।

ब्रज धाम वासी हरषाये,
सब कान्हा से प्रीत दर्शाये।
माखन चोर कान्हा कहलाये,
यशोदा से कान पकड़ाये।

धेनु चराये वन वन जाये,
गोपियों से करें किलोल।
कभी फोड़े मटकी गोपियों की,
तो कभी छुपाये चोली नंदकिशोर।

राधा हो या हो मीरा
कृष्ण को सब प्यारी।
सुदामा संग निभाई मित्रता,
ऐसे थे निराले कृष्ण मुरारी।

कितना रूप सजा मनमोहक,
कान्हा सजा अद्‌भुत आकर्षक।
गोवर्धन पर्वत उंगली पर उठाय,
तो कभी कालिया नाग से बचाय।

आओ सखियों सब मिल गायें,
जन्म दिवस कान्हा का मनायें।
गली-गली नगर-नगर,
मटकी फोड़ें रास रचायें।

—शारदा कनोरिया
पुणे महाराष्ट्र

राधा व मीरा

आनंद रावत

राधा का प्रेम बड़ा या
मीरा की अविरल भक्ति!
राधा और मीरा
दोनों ने श्याम को चाहा!
एक प्रेम दीवानी,
एक दरस दीवानी!
प्यार तो बस प्यार है,
इसमें क्या पूरा क्या आधा!
दोनों की चाहत है बेमिसाल,
चाहे मीरा हो या राधा!
पीर लिखो तो मीरा जैसी,
मिलन लिखो तो कुछ राधा जैसा!
दोनों ही हैं कुछ पूरे से,
दोनों में ही वो कुछ
आधा सा!
कान्हा रे तू राधा बन जा,
भूल पुरुष का मानज
तब होगा तुझ को राधा की
पीड़ा का अनुमान!
मीरा कृष्ण के प्रेम में पागल घूमे गली–गली,
पागल का मतलब,
काया कान्हा,
मीरा की मैं–मैं गली!
कृष्ण की अविरल भक्ति
की साधिका थी मीरा,
राधा ने कृष्ण के प्रेम को ही भक्ति मानकर साधा!
राधा एक आध्यात्मिक
पृष्ठ है,
जहाँ द्वैत अद्वैत का
मिलन है!
कृष्ण की अलौकिक भक्ति में समर्पित दिव्यता ऑ
आध्यात्मिक सामर्थ्य की प्रतिमूर्ति थी मीरा!
मीरा कृष्ण की भक्ति का नर्तन है, गायन है और
कीर्तन है!
राधा कृष्ण की आँख है,
तो मीरा कृष्ण के आँसू हैं!
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
राधा के मनमोहन!
राधा नित शृंगार करे,
और मीरा बन गयी जोगन!
एक रानी एक दासी,
दोनों हरि प्रेम की प्यासी!
अंतर क्या दोनों की
तृप्ति में बोलो,
एक जीत न मानी,
एक हार न मानी।
एक प्रेम दीवानी,
एक दरस दीवानी!!

—आनंद रावत
गुरुग्राम

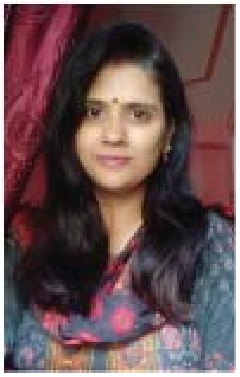

उर्मिला पपनोई

जन्माष्टमी विशेषांक

चल पड़े थे कई विचारों के मंथन संग,
बह गये थे अनजान एक बहाव से हम।
न आसमाँ दिख रहा, न जमीं दिख रही थी,,
न ही एहसास कोई, न ही मन में कमी थी।

एक सूनापन छा गया सब ओर था,
तब यारों थे किंकर्तव्यविमूढ़ से हम।
क्या होता होगा सबके संग ऐसा कभी,
सोच-सोच अब भी घबरा-से गये हम।

फिर भी कैसी थी शक्ति व कैसी पिपासा,
ज्ञान के चक्षुओं में आस की एक लौ थी।
वो सपने सुनहरे भविष्य के हमने,
किस आस पर किस सहारे पे देखे।

वो शक्ति वो प्रेरणा आपकी थी,
एक हारे हुए मन का बल आपसे था।
ओ कान्हा! जब-जब मानव मन हारा,
तब-तब तुमने भरा जोश व दिया सहारा।

इन चक्षुओं की प्यास बन तुम आ गये,
गम के मारों के गम सभी पिघला गये।
टूटा था मन मेरा जोड़ दिया कान्हा,
आशा की इक ज्योत जला दी न।

किया मानव मन को कभी निराश,
तुमने काटा जीवन से नैराश्य वैराग्य।
रक्षण करते भक्तों का बंशी बजैया,
सकल विश्व में पूर्ण पुरुषोत्तम,
इक तुम ही तो हो मेरे कृष्ण-कन्हैया!

—उर्मिला पपनोई
गुरुग्राम, उत्तराखंड (स्यालदे)

कृष्ण मुरारी (पद्य)

श्री हरि हर घट-घट के वासी,
सत्य सनातन और अविनाशी,
देवी देवता दरस को तरसे,
मैया यशोदा है गोद खिलाती।

सारा विश्व प्रकाशित उससे,
हर एक तत्व समाहित उसमें,
अनंत माया से व्याप्त है वह,
समय चक्र प्रभावित उससे।

अपरंपार है उसकी माया,
सारा जग उसकी ही छाया,
पृथ्वी जल वायु और अग्नि,
उसके रूप में ही है समाया।

तेरी सूरत पर हूँ बलिहारी,
सुंदर छवि मनमोहन प्यारी,
दरस तेरा पाके सुख पाऊ,
निर्गुण सगुण स्वरूप धारी।

शंख गदा पदम चक्रधारी,
दीनों के अति परोपकारी,
तेरे मुख मंडल की आभा,
अति मन भावे कृष्ण मुरारी।

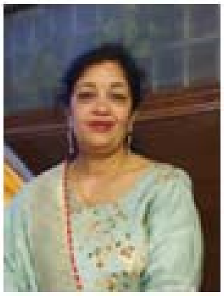

मीनाक्षी भास्कर

—मीनाक्षी भास्कर
शहर-जालन्धर
प्रदेश-पंजाब

लक्ष्मी चंद्रवाल

हे! कृष्ण कन्हैया आ जाओ

कृष्ण जन्माष्टमी की शुभ घड़ी आयी,
संग-संग अपने ढ़ेरो खुशियाँ लायी।
कृष्ण जन्म का हर्ष चारों ओर छाया,
कृष्ण कन्हैया की तो है अद्भूत माया।।

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष की अष्टमी को,
कृष्ण अवतरित हुए, मानव-प्रेम जगाने को।
जन्म हुआ था आधी रात, कंस कारागार में,
जन्मभूमि मथुरा और कर्मभूमि थी गोकुल में।।

देवकी के नंदन कहलाए, यशोदा के वो लाल,
वासुदेव के तनय कहलाए, नंद के वो गोपाल।
सांवली सूरत, मोहिनी मूरत, ऐसा जादू करती,
सुध-बुध खो गोपियाँ, बस कान्हा कान्हा रटती।।

माखन चुरा, वंशी बजा,गोपियों संग रास रचाया,
अलौकिक, अद्भूत लीलाओं तुमने कर दिखाया।
क्रूर कंस, पूतना का वध करने,धरा पर तुम आए,
द्वापर युग में द्वारकाधीश,तुम युगपुरुष कहलाए।।

राधा के संग प्रीत निभाने, द्रोपदी की लाज बचाने,
सुदामा सी मित्रता निभाने, अर्जुन का सारथी बनने।
गीता का वो ज्ञान बाँटने,यमुना के तट वंशी बजाने,
हे! कृष्ण कन्हैया आ जाओ, निर्बल का बल बनने।।

—लक्ष्मी चंद्रवाल
कर्णप्रयाग (चमोली) उत्तराखण्ड

कान्हा बड़ा उदास

डॉ माधवी मिश्रा 'शुचि'

हरे भला किसी माँ का दर्द
 कान्हा बड़ा उदास!
देखो दर्द दर्द देवकी माँ का—
जिसने कर दिया तुरंत जन्मे
लाल को खुद से दूर!
न जाने कितनी रातें
रोते बिलखते जागते बीती होगी—
यह कैसा दर्द उस माँ का
जिसने ईश्वर को जन्मा—
पर खुद के कर्म का ऐसा लेखा—
जो अपने लल्ला को सीने से—
लिपटा भी ना सकी!
तड़पती बिलखती कारागार में—
लल्ला लल्ला पुकारती रही...

देखो कैसी यशोदा माँ—
लल्ला के आने की खुशहाली मानाती।
यशोदा माँ का निश्चल वात्सल्य प्रेम बना दर्द...
पलाक कान्हा की कहलाई
लिपटा कर रखा सीने से—
बालक को हर पल निहारती,
मुस्कुराती बलियाँ ले हर बला से बचाती!
देखो यह कैसा नजारा यशोदा
माँ का आँचल छोड़ कान्हा—
स्वयं उलझ जन्मदाई माँ का
दर्द हारने को बढ़ता कदम—
बढ़ाते एक-एक कदमों की दूरी से—
माँ तड़पती बिरहा में यही—
कहती कब आएगा मेरा लल्ला,
कब लिपटाकर उसे सीने से निहारूँगी...

—डॉ माधवी मिश्रा 'शुचि'

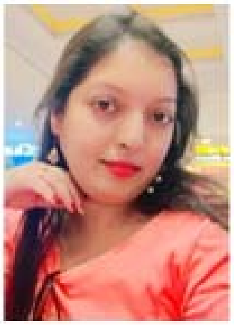

हेमा जैन'

कान्हा से लागी लग्न

तुमसे लागी लग्न ले लो अपनी शरण
ओ मेरे कान्हा
मेटो मेटो जी संकट हमारा
निश दिन तुमको जपु पर से नेहा तजु
ओ मेरे कान्हा
मेटो मेटो जी संकट हमारा

इन्द्र और देव गण भी आये
राधा निश दिन तुमको पुकारे
आशा पुरो सदा दु:ख नहीं
पावे कदा सेवक थारा
मेटो मेटो जी संकट हमारा

जग के दु:ख की तो परवाह नहीं है
स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेटो जामन मरण होवे
ऐसा जतन ओ मेरे कान्हा
मेटो मेटो संकट हमारा

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ
जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ
आशा पुरो सदा दु:ख नहीं
पावे कदा सेवक थारा
तेरे चरणों में बीते हमारा

—हेमा जैन'

माधुरी शर्मा मधुर

मुक्तिधाम

चहुँ ओर जब दिखे ना कोनो छोर
याद करते हो जब तुम्हें ही हम चित्तचोर
तो आन बसो तुम ही मेरे हिय में
हे! श्याम

उस अन्तर्मन की गहराई में
देखना इंतजार करता है
आज भी कोई
उस बंसी की धुन का

द्वारकाधीश नहीं
कान्हा बन कर तुम आना
मेरे हिय में बसी
विरह की अग्नि में जलती

राधारानी को रिझाना
उसके निश्छल, निर्मल,निस्स्वार्थ
प्रेम को समझना
जो सिर्फ तुम्हारे लिए ही है

फिर राधा भी तुम संग
तुम्हारी मुरली की धुन पर
अपनी पायल छनकाते हुए नाचेगी

फिर...
राधा–श्याम एकमेक होकर
मेरे अवचेतन मन का
अंश हो जाएँगे

और मेरी आत्मा
इस प्रेमद्वार को पाकर
मुक्तिधाम तक पहुँच जाएगी।।

—माधुरी शर्मा मधुर
अंबाला हरियाणा

◆ सामाजिक कहानी

(सच पर आधारित एक कहानी)

चेन्नई की बाढ़ का साक्षी एक भुक्तभोगी...

आशुतोष जायसवाल

'अपनों का साथ, अपनों का हाथ'

'व्योम से वसुधा तक तने सारे तंबू उखड़ गये ...'

'भयानक गर्जना और निर्मम वज्रपात और फट पड़ा बेरहम आसमान ...'

'सारी-सारी रात अहनिर्ष बारिश मूसलाधार!'

'झिलमिलाते समस्त तारे विलीन, शीतल मनोरम चाँदनी विलुप्त...'

'काला-विकराल भयावह आसमान...'

'अपने भयानक बालों को खोल करता रहा अन्तर्नाद'

'सारी-सारी रात!'

'डूब गईं सड़कें, दिशाएँ हो गईं गुम...'

'बेचैन, सहमी, फरफराती पक्षियाँ पस्त हो गईं वहीं'

'जहाँ-जहाँ थी पड़ी,'

'मवेशी, कुत्ते, बिल्लियाँ सब अन्तर्धान ...'

'शजर-पेड़ सब जड़वत, शोक संतप्त! ऊपर घनघोर' घमासान, घटाटोप आसमान...'

'आह, कितना खौफ, कितनी दाह, कितना जलप्रवाह!'

'तभी स्फुलिंग की तरह बिजली चमकती है और कई उपस्थित सिले होंठों पे बेबस सी मुस्कानें थिरक उठती है।'

'क्यों न होठों पे मुस्कान थिरके...'

'क्यों न मन में आत्मविश्वास उपजे...'

'जब ऐसी भयानक त्रासदी में भी साथ हो अपनों का'

'हाथ हो अपनों का...!'

'ये वाकया है चेन्नई की उन भयानक रातों का जब अनवरत, अहनिर्ष बारिश के पश्चात सारा शहर जलमग्न था।'

‘बिजली गुल थी और मोबाइल भी चुप था।’

‘दरवाजे पे बरसते जल का पूरा जमाव था ...’

‘कहीं कहीं घुटनों और कहीं कहीं कमर तक पानी का सैलाव था... !’

‘पर न कहीं पीने को पानी था और न कहीं खाने को राशन था।’

‘आँधी, तुफान, घनघोर बारिश, चारों ओर जल ही जल का साम्राज्य और दिन में भी रात्रि का अहसास हम सभी लोगों के मन में भी एक अजीब सी डर के अनुभूति का सृजन कर रहा था।’

‘यह एक अकाट्य सत्य है कि कठिन परिस्थितियों में जब अपनों का साथ होता है तो बड़ी से बड़ी कठिनाईयों में भी सहजता का अहसास होता है।’

‘चार दिन बीत गये थे खाने को चावल और दाल का बनना भी सम्भव नहीं था क्यों कि पीने योग्य जल का पूर्ण अभाव था। संयोग से मेरा कांसे का लोटा जल से भरा था जो आज तक के लिए प्रर्याप्त तो नहीं था पर जीने के लिए जल के रुप में वही एक मात्र सहारा था।’

‘मोमबत्ती की धूमिल टिमटिमाती रोशनी में हम सभी लोग एक दूसरे का चेहरा देखकर ढाढ़स बंधाने की कोशिश करते और जब-तब लूडो खेलकर समय बिताने लग जाते।’

‘झिंगुर के बोलने की डरावनी आवाज के साथ साथ मेंढ़कों के टर टर की आवाज सुनकर हमें रात में बिताए गये घने भयावह जंगल का अहसास हो रहा था। डरते सहमते हमलोगों ने रात गुजारी और सुबह की स्वर्णिम बेला में छत पे जाकर प्रकृति का विभत्स नज़ारा देखने लग गये।आज पांचवां दिन था, बारिश तो थम गयी थी पर कभी-कभी जल की ठण्डी फुहारें आती और छत पर किसी बाहरी मदद की आशा में प्रतिक्षा करते हमलोगों को सराबोर कर जाती।’

‘सुमन, मैं, शायनी, अनुपमा और निशांत हम पाँचों जन छत की रेलिंग पर टेक लगाए दूर से आती एक धुंधली आकृति को देखने लग गये।’

‘धुमिल आकृति धीरे धीरे स्पष्ट होती चली गयी।’

‘जल की धार को चीरती हुई एक छोटी सी नौका जिस पर चार लोग सवार थे, हमारी ओर बढ़ी चली आ रही थी।’

‘दूर से ही हमलोगों ने सहायता हेतु हाथों को हिलाया और नौका सीधे हमारे घर के सामने आकर रुक गयी।’

‘दो डबल रोटी, एक सौ ग्राम मक्खन का पैकेट, एक लीटर दूध, दो पैकेट मेरीगोल्ड बिस्किट, पाँच लीटर पानी का कैन दो सौ रुपये देकर हमलोगों ने खरीदा। ये सारी खाद्य सामग्रियों को पाकर हमारे मन में अभूतपूर्व हिम्मत, साहस और जोश का संचार हुआ। उनलोगों ने कहा कल से ही मौसम के ठीक होने की पूरी सम्भावना है।’

‘हमारे मुरझाये चेहरों पर धूमिल सी आस की किरणें दिखाई पड़ने लगी और डूबते को तिनके का सहारा की भांति हमारी बांछें खिल उठीं। हमारी खुशी का पारावार नहीं था वो तो सातवें आसमान पर पहुँच गयी थी। ऐसा लगा मानों सूखे और बियाबान मरुस्थल में भटकने जलते हम पांचों को अपार जलस्त्रोत मिल गया हो।’

‘सुबह के उस निस्तब्ध वातावरण में जब शीतल मन्द समीर की सौंधी सुगंध फैल रही थी, जब आकाश में कहीं दूर से झांकती लालिमा ने अपना विस्तार किया था, जब दूर पीपल के दरख़्त से झांकती एक चमकती लकीर धीरे धीरे स्याह गोले में परिवर्तित होती गयी थी ऐसा प्रतीत हुआ मानो पितांबर ओढ़े एक नयी नवेली दुल्हन हमारे समक्ष प्रगट हो गयी हो, तब एक नया सबेरा हमलोगों के लिए एक नयी सौगात लेकर आया!’

‘विगत पाँच दिनों में गुजरे प्रत्येक पल हमें आजीवन याद रहेंगें और इस बात की गवाही देंगें कि दुख और बुरे वक्त में अपनों का साथ हमारे मन को असीम बल प्रदान करता है और कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हम एक दूसरे के सहारे एक दूसरे की बाहों को थामें अथाह सागर को भी पार कर जाते हैं।’

—आशुतोष जायसवाल
बैंगलोर
25, जनवरी 2017

◆ कहानी

संघर्ष की कहानी

किसी दूरस्थ जगह पर एक गाँव बसा था। गाँव में न सड़क थी और न स्कूल 7 मीलों दूर पैदल जाना पड़ता था स्कूल बहुत दूर होने के कारण वहाँ के बच्चे पढ़ नहीं पाते थे। पढाई न करने के कारण आगे नहीं बढ़ पाते। उसी गाँव में मोहित नाम का एक लड़का था। उसे भी यह सब अच्छा नहीं लगता था। एक दिन उसने सारे गाँव वालों को बुलाकर एक बैठक रखी, और बताया कि हमारे गाँव के बच्चे शिक्षा से बंचित रह जायेगे और आगे नहीं बढ पाएँगे। हम सबको मिलकर विद्यालय भवन का निर्माण करना होगा। आप सबको मिलकर मेरे साथ काम करना होगा गाँव के सभी लोग मोहित का साथ देने के लिए तैयार हो गये।

मोहित के साथ काम करने वाले लोगों ने भी उसके साथ मिलकर स्कूल के लिए काम किया। सभी लोगों ने अपनी मेहनत और समय का इस्तेमाल करके स्कूल की शुरुआत की। मोहित ने बहुत मेहनत की और स्कूल का निर्माण कर लिया। स्कूल बनने के बाद मोहित को लगा कि अब उनकी अपनी जिंदगी में कोई कमी नहीं है। अब उनके गाँव के बच्चे भी पढ़ सकते हैं और अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकते हैं। मोहित बहुत खुश था कि उसके अपने गाँव के लिए कुछ ऐसा किया है जो लोगों की जिंदगी को बेहतर बना सके।मोहित ने स्कूल को चलाने के लिए सभी सुविधाओं को प्रदान किया। उसके स्कूल में अच्छे शिक्षकों को रखा, जो बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार थे। मोहित ने स्कूल में स्वच्छता और खाने की सही मात्रा को भी ध्यान में रखा।

स्कूल के शुरू होने के बाद, उसमें बहुत सारे बच्चे आए और अपनी पढ़ाई शुरू की। मोहित बहुत खुश था कि उसके सपनों को सच करने में लोगों ने साथ दिया और अब उनके गाँव के बच्चे अपनी पढ़ाई कर सकते हैं। मोहित को समाज सेवा और सेवा भाव के लिए बहुत सलाम किया जाता है। उसे अपनी जिंदगी में कभी भी हिम्मत नहीं हारी और अपने सपनों के लिए काम करना जारी रखा। मोहित का सपना था कि वो अपने गाँव के लोगों की जिंदगी को बेहतर बनाएँ और मोहित ने अपने सपनों को सच कर दिया।

मोहित अपने गाँव के स्कूल को चलाता रहा है और अपने गाँव के बच्चों को पढ़ता रहा। वो अपने सपनों को सच करने के लिए तन,मन और धन से कार्य करता रहा। हमेशा समाज सेवा और सेवा भाव के लिए काम करता रहा।

कहानी से सीख—कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन में संघर्ष ही हमारी ताकत को विकसित करते हैं। संघर्ष करने से ही आगे बढने का हौसला, आत्मविश्वास मिलता है। और अन्त में हम अपनी मंजिल हासिल कर लेते हैं। और आनंद का अनुभव कर पाते हैं।

दमयन्ती राणा

—दमयन्ती राणा
कर्णप्रयाग चमोली
(उत्तराखंड)

◆ कहानी

अकेली

रेवती शर्मा 80 पार कर चुके हैं। अपने ही घर में एक कैदी की भांति रहती है। शर्मा जी अब रहे नहीं, जब तक थे। तब तक ठीक था। लड़ते झगड़ते पर रहते साथ में थे।साठ साल पहले लव मैरिज की थी पर भुगतान आज भी करना पड़ रहा है। उस वक्त समाज ने बहिष्कार किया मान प्रतिष्ठा सब दाँव पर लग गयी, रिश्तेदारों ने आना-जाना छोड़ दिया। शर्मा जी का परिवार अकेला पड़ गया था।बच्चे भी 12 साल बाद हुए। रेवती ने बड़ी वफ़ा से सबका साथ निभाया।

बच्चे उसे इतने प्यारे थे कि वह उनके स्कूल में भी साथ जाती थी। जब तक बच्चे पढ़ते गेट पर बैठी रहती छुट्टी होने पर जैसे ही बच्चे आते गले से लगाती, लंबी सांस लेती आते जाते लोग देखते कोई ताना कस देता था बुढ़ापे की औलाद है। उससे रेवती को कोई फर्क नहीं पड़ता उसे तो अपने बच्चों में तीनों लोकों को सुख दिखाई देता था। बच्चे के पैर घुटने के नीचे तक लटकते थे फिर भी बच्चे को गोद में उठाकर चलती थी।दोनों बेटे धीरे-धीरे बड़े होने लगे अब बच्चों को शर्म आने लगी वह बात बात पर माँ की शिकायत पापा को करने लगे तब पति पत्नी में झगड़े बढ़ गये लेकिन रेवती के प्यार में कोई कमी नहीं आई, एक दिन तो हद हो गयी बच्चों ने माँ को कहा नाटक मत करो, रेवती को चक्कर आ गया उसके सच्चे प्यार को नाटक कर रहे हैं दोनों भाइयों ने माँ से बोलना बंद कर दिया। रेवती की हालत पागल जैसी हो गयी। गार्डन में जाकर रो लेती थी कहे तो किसको कहे और क्या कहे उसका कसूर ही क्या था बस प्यार ही तो करती थी।

कभी-कभी अपनी कामवाली बाई अनीता से कहती तू तो देख रही है ना यह तीनों बाप बेटे मेरे साथ कैसा व्यवहार करते हैं मैं कहाँ जाऊँ और रोने लगती। आँख के आँसू रुकने का नाम ही नहीं लेते उसे लगता मैंने तो वफा की मुझे बेवफ़ाई क्यों मिली।

डॉ. लीला दीवान

करोड़ों का मकान जेवर इन सब का क्या करूँ, पहनने का मन ही नहीं करता फिर सोचती मेरी बहू आएगी तब उसको दे दूँगी।

रेवती के दु:ख और बढ़ गये जब बड़े बेटे ने लव मैरिज कर ली और अपना हिस्सा माँगने लगा, उसने घर में रहने से साफ इनकार कर दिया और कहने लगा मैंने तो पूरी जिंदगी इस पागल के साथ बिताई है पर मेरी पत्नी इस नरक में नहीं रहेगी। शर्मा जी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और बोले जिसे तू पागल कह रहा है वह तेरी माँ है इसका कसूर इतना ही है कि यह तुझे प्यार करती है।

पापा आप तो चुप ही रहो गाय अपने बछड़े को प्यार करती हैं और चाटती रहती हैं पर जब ज्यादा चाटती है तो चमड़ी छिल जाती हैं, बंदरी अपने बच्चे को मरने के बाद 15 दिन तक छाती की चिपकाए रहती है इसका नाम प्यार नहीं है। इसको आप प्यार कहोगे ये तो पागल पन है। हम अब बड़े हो गये हैं और एक कमरे में ताला लगाया और बोला मैं जा रहा हूँ, कार में ले जा रहा हूँ और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

एक ही शहर में रहता है उसके दो बच्चे भी हुए पर रेवती को कभी फोन भी नहीं किया अब तो रेवती का एक ही सहारा था। ''छोटा बेटा।''

छोटा बेटा इंजीनियरिंग कर रहा था उसके लिए लड़की की तलाश शुरू कर दी, वह चाहती थी क्रम से कम एक बहू तो मेरे पास रहेगी मैं तो यही सोच लूंगी कि मेरा एक ही बेटा है। मन को समझाती पर मन मानता ही नहीं था। बड़े बेटे को वह भूल ही नहीं पा रही थी। उसने उसे माँ बनने का सुख दिया और उस सुख के आगे यह दु:ख तो बहुत कम है।

दूर के रिश्तेदार ने एक लड़की दिखाई, रेवती तो देखते ही खुश हो गयी। लड़की माँ बाप की इकलौती संतान थी।

शर्मा जी ने शादी बहुत अच्छी की चाँदी के सिक्के सबको विदाई में दिए।

बहू को मुंह दिखाई में रेवती ने अपनी सारी ज्वेलरी दे दी पर यह क्या बहू को तो तनिक भी खुशी नहीं हुई। रिश्तेदारों ने भी देखा, देखते ही समझ गये। बहू का व्यवहार अच्छा नहीं है।

बहू आने से रेवती का काम और बढ़ गया। बहू के उठने से पहले नाश्ते की सारी तैयारी कर देती थी। बहू अपने घर में 11:00 बजे उठती थी वो यहाँ भी देर से उठती, नाश्ता करके किताब पढ़ने बैठ जाती थी। कुछ दिन तो ऐसे ही चलता रहा, रेवती सोचती नई-नई है धीरे-धीरे सीख जाएगी।

रेवती कभी कुछ नहीं कहती बहू जो फरमाइश करती वह बना देती रात को बोले दही बड़े खाने हैं तो सबके सोने के बाद दाल भिगोती सुबह उठते ही दाल पीस, बड़े बनाती।

नाश्ते में सबको बड़े खिलाती अच्छे दिन बीत रहे थे।

छोटा बेटा सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। विदेशी कंपनी का ऑफर आया, बेटा और बहू दोनों जापान चले गये, अकेली रह गयी रेवती

बच्चों के बहाने तो बनाती थी। खाती थी। अब तो बस दाल, खिचड़ी ऐसे ही काम चलाती।

शर्मा जी की तबीयत ठीक नहीं रहने लगी, एक दिन सोए तो सोते ही रह गये।

रेवती अकेली रह गयी, रेवती ने तो सबको बहुत प्यार किया पर उसे प्यार के बदले में प्यार नहीं मिला।

वह सोच रही थी। ऐसा क्यों हुआ वफा के बदले बेवफ़ाई क्यों मिली।

तभी अनीता ने कहा मैंने खाना बना दिया है। मैं जा रही हूँ कल नहीं आऊँगी मैं अपनी माँ से मिलने जा रही हूँ। रेवती कहती हैं तेरी माँ बहुत खुश नसीब है, जा तु मिल आ मैं अपने आप संभाल लूँगी।

—डॉ. लीला दीवान
जोधपुर, राजस्थान
मो.: 94606 63280

दरख्तों के साये में

रोज की तरह आज भी नीमा सुबह उठकर गेट पर पड़े अखबार को उठा दिनचर्या में लग गयी। अपने पल्लू को कमर मे कस, बालों को समेट कर वो हर बीती बातों को समेट अपने मस्तिष्क से मानो हटा देती थी, और चल पड़ती थी अपने कर्तव्यों और दायित्वों को पूरा करने में।

माँजी आपकी काली चाय, नीमा बोली। ये क्या? अभी से ले आयीं, अभी बस मुंह धोकर खड़े ही हुए हैं, अजब जल्दबाजी है, सारी चाय ठंडी हो जाएँगी, नीमा की सास बुदबुदाने लगी। हल्के से मुस्करा कर नीमा दूसरे काम की तरफ बढ़ गयी। अपने अंदर कई तूफान समेट कर वो यूँ घूमती थी, मानो कुछ हुआ ही ना हो।

आज पूरे दो महीने हो गये थे, ना सौरभ ने कोई फोन किये थे, और ना ही कोई खबर ली थी, सौरभ तुम ऐसे हो जाओगे, कभी सोचा ही नहीं था, तुम्हारी हर परेशानी मैने तुम्हारे साथ झेली, ठंडी साँस भरते हुए वह मन ही मन बोली। तभी कालबेल बजी, और आँसू पौंछते हुए वह दरवाजे पर दौड़ पड़ी, ना जाने इस वक्त कौन आया है?

सोचते हुए दरवाजा खोली, दरवाजे पर उसके कालेज का चपरासी था, दीदी लायब्रेरी की चाबी बड़े साहब मंगा रहे हैं, चपरासी बोला। क्यों कुछ काम है? अंदर जाते हुए नीमा बोली। आओ अंदर बैठो मैं लाती हूँ चाबी, बोलते हुए नीमा कमरे में चली गयी सुनो बड़े साहब को ये एप्लीकेशन दे देना, आज थोड़ा देर से आऊँगी कालेज बाबूजी को रुटीन चेकअप के लिये ले जाना है, नीमा बोली आज्ञाकारी बच्चे की तरह हाँ मिलाते हुए चपरासी बोला,जी दीदी।

बस यही क्रम दोहराते हुए, धीरे धीरे नीमा को इस घर मे ब्याह कर आये, पूरे पच्चीस साल हो गये थे, आज

स्मृति मिश्रा 'रीति'

जब सुबह अपने बालों को समेटते हुए, अखबार उठाने को झुकी तो उसे अपनी उम्र महसूस हुई, नीमा की कमर में दर्द था ना जाने क्या सोचती हुई नीमा आईने के पास जा खड़ी हुई, मानो जानना चाहती हो कुछ ...

चश्में उतार आईने में खुद को देखा तो जैसे हैरान हो गयी गोरे गोरे चेहरे पर हल्की सी झुर्रीयाँ झाकने लगी थी, और आँखों के नीचे काले गहरे गड्ढे और थकान उसकी सारी कहानी बयान कर रहे थे, अपने अंदर चल रहे द्वन्द्व को झटक कर पुन: पल्लू को कमर में खोंस अपने दैनिक कार्यों में जुट गयी, माँजी चाय ला रही हूँ मुँह धो लो! बोलते हुए रसोई में चली गयी चाय ट्रे में लेकर जब माँ बाबूजी के कमरे की तरफ बढ़ी उनके बीच हो रही बातचीत को सुनकर उसके कदम ठिठक गये और वो सुनने लगी।

सुनते हो अपना पड़ोसी अंशुमान है ना, कल नीमा के जाने के बाद आया था, नीमा की सास बोली!

अच्छा, क्या बोला? ससुर बोले। कल ही हैदराबाद से वो लौटा है, बता रहा था कि सौरभ से मिला था सास बोली।

अच्छा, कैसा है? सौरभ कहाँ है? क्या कर रहा है? कुछ बताया? ससुर बोले .हाँ बताया तो कि वो ठीक है, और प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता है, सास बोली।

ओह, चलो ठीक है, बाद में बात करते हैं, नीमा आती होगी, कहकर उन्होनें सास को चुप रहने का इशारा किया। नीमा कमरे में चाय रखने गयी तो दोनों अगल बगल देखते हुए चाय का प्याला ऊठा लिये और आज बिना कुछ बोले सास चाय की चुस्की लेने लगी, क्या बात है? आज आप ठंडी चाय पी रही हो, बिना किसी शिकायत के, कुछ छिपा रही हो मुझसे! नीमा बोली अरे नहीं भाई बहुत अच्छी बनी चाय तो...सास ने लगभग टालते हुए कहा, लाईये गर्म कर चाय लाते हैं दीजिये हाथ से प्याली लेकर रसोई की तरफ बढ़ गयी।

अभी तो हम कुछ नहीं बोले, पर उसे बताना तो होगा ना असलियत! सास बोली, अरे समझती क्यों नहीं उसे झटका लग जायेगा, कभी तो अक्ल का साथ लो बोलते हुए ठंडी सांस भरी, अब जैसा तुम कहो बाकी सोच लो सास ने कहा।

हजारों सवालों से लदी, नीमा कालेज पहुँची। आज लेक्चर देते वक्त भी भारी सर होने लगा, जैसे तैसे सब आफिस का काम खत्म कर आधे दिन का अवकाश लेकर घर पहुँची, दरवाजा खोल सीधे कमरे में जाकर बिस्तर पर निढाल हो गिर गयी. सास ससुर की बातें उसके कानों में गूँजने लगी, आखिर क्या बात है? ये दोनो मुझसे क्या छिपा रहें हैं? नीमा मन ही मन सोचने लगी तभी कालबेल बजी, बड़ी मुश्किल से दरवाजे तक पहुँची दरवाजा खोली सामने अंशुमान खड़ा था। नमस्ते भाई साहब आइये ना आप अंदर, नीमा बोली। नमस्ते भाभी सहम कर अंशुमान बोला। कहिये, कैसे आना हुआ आपका नीमा मुस्कुराते हुए बोली। वो भाभी अंकल जी बुलाये थे, अंशुमान ने कहा, ओह, आखिर कौन सा ऐसा काम है? मुझे ना बोलकर आपको बुलाया नीमा बोली, भाभी उन्हें सौरभ के बारे में कुछ बात करनी है, अंशुमान बोला, क्या बात करना है

उन्हें नीमा बोली, भाभी! और कुछ तो नहीं बता सकता बस सौरभ कुछ दिनो बाद आ रहा है, बस ये सुनकर ही वो खुश हो गयी, जोर जोर से चिल्लाते हुए माँ बाबूजी के कमरे में दौड़ गयी। बाबूजी सौरभ वापस आ रहे हैं, दौड़ कर सास से लिपटकर बोली माँ सौरभ वापस आ रहे हैं, खुशी और शर्म से लाल नीमा बोली, अंशुमान भैया आप बहुत बड़ी खुशखबरी दिये हो, बिना डिनर किये तो आज जाने ना दूँगी। इतनी थकी और हताश नीमा में जैसे उस वाक्य ने प्राण फूँक दिये थे। उत्साह से भरी नीमा रसोई में डिनर की तैयारी में लग गयी।

अचानक उसे जैसे कुछ याद आ गया हो वो पुन: माँ बाबूजी के कमरे की ओर बढ़ गयी, परदे के कोनों को हाथ में भींचकर अंशुमान से बोली, भैया कब आ रहे हैं सौरभ? 6 तारीख को भाभी अंशुमान बोला। वो कैलेंडर की तरफ देखते ही बोली, ऊफ्फ आज 5 है, मतलब कल सौरभ आ रहे हैं। मुझे कितने काम करने हैं? नीमा बोली।

कल सबकुछ सौरभ की पसंद का होगा। सुबह से तैयारी करनी होगी। कल कालेज से अवकाश ले लूँगी, तब ही सबकुछ संभव होगा। सोचते सोवते कब आँख लग गयी पता ही नहीं चल। सुबह जब नींद खुली, आज नीमा के चेहरे पर वही चौबीस साल वाली नवयौवना

दिख रही थी। गेट से अखबार उठाते हुए चिल्लायी, माँ जल्दी मुंह धो लो, आज आपका बेटा आने वाला है, बहुत सी तैयारी करना है, मैं चाय लाती हूँ, नीमा बोली। चाय देते हुए आज नीमा सास के पोपले से गाल पर प्यार करते हुए बोली, माँ! चाय पी लो आज ठंडी हुई तो गरम करने का वक्त ही नहीं है, नीमा मुस्कुरायी, ओर अन्य कामों में लग गयी। देखते ही देखते कब दोपहर के तीन बज गये, पता ही ना चला, थकी नीमा बैठक में पंखे को चालू कर सोफे में निढाल हो बैठ गयी, अभी कुछ मिनट ही हुए थे, कि तभी कालबेल बजी, जरूर सौरभ होंगे, सोचते हुए झटके से उठी और दरवाजा खोलने को आगे बढ़ी, अनायास रुकी, और दौड़कर आईने के सामने जा खुद को व्यवस्थित किया और खुद को निहारते हुए मुस्कुरायी और दरवाजा खोली। सामने सौरभ को देख उसकी सारी इंद्रियाँ मानो जम सी गयी। कैसी हो? सौरभ ने पूछा, उसने किसी मासूम बच्चे की तरह गर्दन हिलाई, जैसे शब्द जम गये थे उसके मुंह में, दौड़ कर चिल्लाई, माँ बाबूजी देखिये, कौन आया है? दोनों अपने कमरे से बाहर आए, और उत्साह से भरी नीमा को देखने लगे, नीमा रसोई से ग्लास में ठंडा पानी भर लेकर आयी, अरे इन सबकी जरूरत नहीं, माँ बाबूजी के चरण स्पर्श करते हुए सौरभ बोला। मैं खाना खाकर आया हूँ, बस तुम यहाँ आओ और आराम से बैठो, मुझे तुमसे काम है, सुन मन ही मन खुश हुई, और बुदबुदाने लगी, इन्हें आज भी मेरी कितनी फिक्र है, वो शर्माते हुए सामने बैठ गयी, तभी सौरभ सूटकेस खोलने लगा, नीमा बोली जरूर कोई उपहार है मेरे लिये। उसके तो जैसे पंख ही लग गये थे, घबराहट और खुशी के मारे आँखें भींच ली उसने, लो ये देखो सुनते ही आँखें खोलीं, कुछ कागज थे, जो सौरभ पकड़े था. लो, पकड़ो इसमें साईन कर दो, हतप्रभ मीना लगभग कागज छुड़ा ली, और पढ़ने लगी, बिना वक्त गँवाये सौरभ बोला, देखो नीमा दिल से ना लगाओ, मैं रेणू से प्यार करता हूँ, और जीवन उसके साथ ही बिताना चाहता हूँ, तुम आजाद कर दो मुझे। सुनते ही नीमा के पैरों तले जमीं खिसक गयी, करो! लगभग जोर देते हुए बोला सौरभ ने, जाने क्या हुआ, कि नीमा ने बिना कुछ पूछे पेपर साईन करते हुए कहा, लो कर दिया आजाद, ओह हाऊ स्वीट आफ यू बोलते हुए पेपर उठाकर अपने माँ बाबूजी के चरण छूते हुए बोला, चलता हूँ माँ बाबूजी प्रणाम और दरवाजे की ओर बढ़ चला, नीमा एक लाश सी निस्तब्ध खड़ी हुई थी। तभी जोर से आवाज आयी रुको, तुमने अभी सिर्फ बहू से आजादी ली, हमसे बाकी है, सुनकर आश्चर्य से सौरभ बाबूजी की तरफ देखने लगा, नीमा की भी तंद्रा खुल गयी। आज से हम दोनो तुम्हें अपने जीवन से, जायदाद से, आजाद करते हैं यहाँ तक हम दोनों बूढ़ा बूढ़ी को मुखाग्नि भी नीमा ही देगी तुम अब आजाद हो।

—स्मृति मिश्रा 'रीति'

'स्वास्तिक' मासिक पत्रिका में अपनी रचनाएँ भेजिए।
'स्वास्तिक' मासिक पत्रिका के सदस्य बनिए और सदस्यता लेकर
'स्वास्तिक' पत्रिका का मार्गदर्शन प्रशस्त कीजिए।
धन्यवाद।

संपादक
'स्वास्तिक'
मासिक पत्रिका

◆ छंद/गीत/गजल

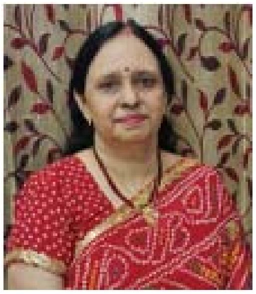

डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'

श्याम तेरी बंसी

मोरपंख से मुकुट बना, जिसमें सारे रंग समाए,
चौसठ कला, रूप त्रयोदश, विष्णु पूर्णावतार कहाए।

अदभुत इंद्रधनुष अद्वैत, पाँव तले, शुभ चिन्ह दिखाए,
अजर अमर अविनाशी कान्हा, मुख ब्रह्मांड दिखाए।

ज्यों सरिता का गहन जल, रंग है अजब दिखाए,
मंद-मंद मुस्कान साँवरे मुख पर खूब सुहाए।

हर लें मोहन सबके संकट, ऐसा अनुपम चक्र चलाएँ,
पिए जो मीरा विष का प्याला, अमृत उसे बनाए।

देवकी नंदन, लाल यशोदा, कभी नारायण कहलाए,
परमपुरुष वासुदेव नंद के, प्रिय नंदन कहलाए।

ग्वाल-बाल संग माखन, मिश्री, गैयन खूब चराएँ,
छूप-छुप कर घर-घर छींके से माखन खूब चुराएँ।

राधा, मीरा की प्रेम-भक्ति, जन-जन सदा सुनाए,
कनिष्ठिका गोवर्धनधारी, इंद्र प्रकोप बचाए।

तन पीतांबर, अधर मुरली, गल वैजयंती हार सुहाए,
श्याम तेरी बंसी जब बाजे, वृषभान कुमारी नाच दिखाए।

—डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'

◆ गीत

निशा अतुल्य

16/16

प्रेम नगर इक चलो बसाएँ

प्रेम नगर इक चलो बसाएँ, सहिष्णुता का फूल खिलाएँ।
मानवता के दीपक अंदर, भाव ज्योति बन कर मुस्काएँ।।

कर्मनिष्ठ बनकर मानव तुम, जग में बढ़ कर नाम कमाना।
सार यही गीता देती है, मन को अपने ये समझाना।।
जीवन में सुख-दुख है सबके, नहीं कभी इससे घबराएँ।
मानवता के दीपक अंदर, भाव ज्योति बन कर मुस्काएँ।।

प्रेम समाहित त्याग तपस्या, अंध रूप में नहीं डूबना।
मानवता के लिए सदा ही, मन अपने से पड़े जूझना।।
भक्ति भाव की चूनर लेकर, हर नारी राधा बन जाएँ।
मानवता के दीपक अंदर, भाव ज्योति बन कर मुस्काएँ।।

भक्ति शक्ति बन आज खड़ी है, निर्मल निश्छल प्रेम निराली।
खो जाते जब मन गुनता है, प्रेम भरे भावों की प्याली।।
मुरली बजती कान्हा आएँ, सबको प्रीति रीति समझाएँ।
मानवता के दीपक अंदर, भाव ज्योति बन कर मुस्काएँ।।

कोई अपना नहीं जगत में, देख यही मन घबराता है।।
टूट रहे बाँधे जो बंधन, बोलो क्या जग से नाता है।।
प्रेम सार है इस जीवन का, काश समझ में सबके आएँ।
मानवता के दीपक अंदर, भाव ज्योति बन कर मुस्काएँ।।

—निशा अतुल्य
देहरादून, उत्तराखंड

◆ काव्य सृजन

सीमा गर्ग मंजरी

सत्संग में बरसे श्याम रंग

सतसंग में बरसे श्याम रंग मैं उसमें शामिल हो जाऊँ,
तेरे मीठे-मीठे भजनों को गाकर मैं काबिल हो जाऊँ!

फूलों की लड़ियाँ महक रही दरबार सजा मनभावन,
शुकदेव अमरकथा रस पी मैं भी हारिल हो जाऊँ!

रंग रंगीले श्याम मनोहर शोभा छिटकी रूप अनूप,
दिल महके मधुबन-सा मेरा साँसों की खुश्बु हो जाऊँ!

इत्र फुलेल चोबा अगरजा से महक रहा अँगनारा,
श्याम प्रेम में रंगूँ चुनरिया प्रीत में कामिल हो जाऊँ!

दूध दही मक्खन मेवा मिश्री से छप्पन भोग सजाए,
जीमो मेरे श्याम धनी खुशियों की महफ़िल हो जाऊँ!

भक्तों ने हिल मिल कर आज मनाया मंजुल उत्सव,
झांझ मंजीरे ढोलक की सरगम पर शामिल हो जाऊँ!

कायनात सारी खिलती है मेरे श्याम तेरे ही नूर से,
जिस ओर नजर जाये हर सूरत में हासिल हो जाऊँ!!

—सीमा गर्ग मंजरी
मेरठ कैंट उत्तर प्रदेश

◆ बेटी

शुभकामनाएँ

डॉ. शशि कान्त पाराशर 'अनमोल'

घर के दीपक जल रहे हैं
घर की ज्योति जल रही है।...!
जगमगाती शान्त रजनी...
निज सदन में चल रही है।...!
मन ही मन की बात सारी
इतना कहने को महतारी
विघ्न सूचक से पलों में...!
कर रही माँ प्रार्थनाएँ...!
मेरी माँ की ये दुआएँ...!
दे रही शुभकामनाएँ...!

घर के आँगन की ये दुनिया
नन्हीं कली से महक जाती...!
घर की ये दहलीज़ रोशन...!
घर के चिराग से जगमगाती...!
सन्तति को जग सराएँ...!
माँ की ममता को समझाएँ...!
शुभ दिवस की कामना लें
प्रकट हुई सब भावनाएँ...!
मेरी माँ की ये दुआएँ...
दे रही शुभकामनाएँ....

बेटी नई उम्मीद के संग
एक नई उडान भरती...!
अब नया इतिहास रचती
मन में स्वाभिमान रखती...!
बेटे की मंजिल शिखर है।..!
प्रयास उसका दर ब दर है।..
अपने पथ पर अग्रसर है
भूल कर सब यातनाएँ...!
मेरी माँ की ये दुआएँ...!
दे रही शुभकामनाएँ...!

—डॉ. शशि कान्त पाराशर 'अनमोल'

◆ बेटी

बेटियाँ बोझ नहीं होतीं

बेटी बोझ नहीं होती हैं,
भार उठातीं हैं सबका।
पढ़कर निज पैरों पर हों,
खड़ी, यही है गुण इनका।।

जीवन में अगणित रंग भरती,
महक रही फूलों सी ये।
इनके जैसा कोई नहीं है,
लहराती झूलों सी ये।।

सबको सुख देकर दु:ख हरतीं,
सबके मन से काम करें।
फिर भी कमी देखता मानव,
इनके सिर सब दोष धरें।।

मानव की जननी है नारी,
जीवन मानव हित गारे।
फिर भी समझ सका न कोई,
इनकी कैसी दुबिधारे?

फिर भी इनका शोषण होता,
जल जैसी ये उज्ज्वल है।
जल की तरह सदा बहती हैं,
वर्तमान, इनसे कल है।।

वेद, पुराणों ने गायी है,
इनकी महिमा सदा सुनो।
फूलों सा सौन्दर्य अनूठा,
रखतीं ममता, दया गुनो।।

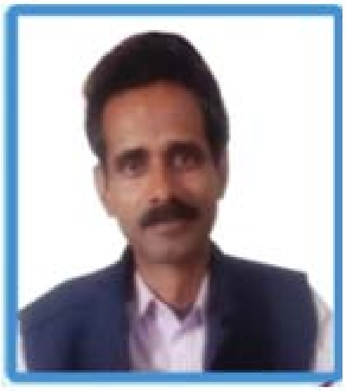

जुगल किशोर त्रिपाठी

सुनती हैं सब, सहती हैं सब,
रहती मौन न कहती हैं कुछ।
घर-परिवार सँवारे ये ही,
नहीं धैर्य को देती बुझ।।

इतनी छोटी बात न जाने,
हर घर में ये रहती हैं।
फिर भी सहें यातना परवश,
नहीं किसी से कहती हैं।।

समझो अब तो चेतो मानव,
क्यों इनको बदनाम करे।
बेटी, बहिन, नारि माँ रुपा,
सकल जगत में नाम करें।।

—जुगल किशोर त्रिपाठी
बम्हौरी, मऊरानीपुर,
झाँसी (उ.प्र.)

◆ सामान्य कविता (गीत)

कमल भास्कर

प्रकृति

नीले अम्बर की शोभा हैं चंदा सूरज और सितारे,
वन नदियाँ पर्वत और सागर सुंदर प्रकृति नज़ारे।

रंग बिरंगे फूल खिले और मख़मल सी हरियाली,
मन मोहित कर देती सबका फूलों वाली डाली,
प्रेम आकर्षण में सृष्टि नित ओढ़े नए परिधान,
सूरज आँख मिचौली करता बीच घटाएँ काली,

कोयल मीठे राग सुनाकर सृष्टि की नज़र उतारे,
नीले अम्बर की शोभा हैं चंदा सूरज और सितारे।

श्वेत कंवल की पंखुड़ियाँ पर भँवरें गुन गुन गायें,
वटवृक्ष की घनी छाँव में शीतल पवन हर्षाए,
स्वर्णिम श्वेत दमक रही है सुंदर ओस की बूँदें,
धानी चुनरिया ओढ़ के अवनि घूँघट में मुस्काये,

स्वर्णिम किरणें वृक्षों से झांके जैसे हीरों की धारें,
नीले अम्बर की शोभा हैं चंदा सूरज और सितारे।

सोंधी सी ख़ुशबू से महका मेरे मन का प्रांगण,
विरहन को मिल जाये जैसे अति अनुरागी साजन,
पंछी मद्धम स्वर में मिलकर गान प्रभाती गाएँ,
मन की वीणा के स्वर संगम मिलके करते गायन।

बीत न जाए पल जीवन के कितने है जो प्यारे,
नीले अम्बर की शोभा हैं चंदा सूरज और सितारे।

—कमल भास्कर
जालंधर, पंजाब

◆ कविता

शशिकला व्यास

राधिका सी प्रतिबिंब लगत चाँद

ये चाँद जरा ठहर जा तेरा मुखड़ा निहार कर,
शरद पूनम की चाँदनी में स्वप्न लोक की
दुनिया बना लेती हूँ।
चंचल मन सा प्रतिबिंब बनाकर
कुछ पल यूँ ही गुजार लेती हूँ।
प्रकृति में सुगंधित फूलों से मकरंद चुरा कर,
चन्द्र किरण से उजली शीतलता लिए
मृगतृष्णा में खो जाती हूँ।
ममता की तरुण लपेटे चाँदनी में
बहती नदियों सा बह जाती हूँ।
अमृत कलश के समान ब्रूदो की
धारा में निर्मल बन कर,
मोती सी चमक ज्योति प्रकाश लिए
मल्लिका बन जाती हूँ।
दर्पण में प्रतिबिंब बन
चाँदनी सी निखर जाती हूँ।

प्रकृति का यह रूप मनोहारी
प्रभु मूरत देख कर,
प्यारी सी राधिका कृष्ण की
मूरत संग छबि में ही खो जाती हूँ।

—शशिकला व्यास
भोपाल मध्यप्रदेश

◆ सामान्य कविता (गीत)

सरोज डिमरी चमोली

संतति

चमक रहे हैं बेटे-बेटियाँ
अंतरिक्ष चूमते,
ये उत्साह-साहस की चोटियाँ।
समय बदल रहा अब पुरनाा,
रूपांतरित है नया जमाना।

आज की नई सदी में।
दूर अंतरिक्ष तक,
चमक रहे हैं बेटे- बेटियाँ।
विभिन्न क्षेत्रों में ये सभी,
बिल्कुल भी कम नहीं हैं।
बनके सूर्यताप अग्नि,
दमक रहे हैं बेटे-बेटियाँ।

ना बनाए बेटा-बेटी
गोल रोटियाँ कोई बात नहीं।
विश्व का भू गोल आज,
पढ़ रहे हैं बेटे-बेटियाँ।।
सिर्फ बेटा ही करेगा,
ऐसा कोई काम नहीं।
विश्व भर में आज नाम
मिलकर कमाते बेटे-बेटियाँ।

भेद जो करते हैं
बेटा और बेटी बोलकर।
सुन लें सभी वो लोग
अपने कान दोनों खोल के।
बेटा-बेटी एक जैसे
आते कुक्षिसागर में।
फिर क्यों भेद दिखाते
इनके सम्मान आदर में।
बेटा-बेटी तो जीवन प्राण तक,
हर सांस कुल का
उद्धार ही करते हैं।

बेटी पराई पूंजी है,
ये बात है अज्ञानता।
वो ही धरा है पूज्य
जिस पर, संतति की महानता।

बेटी को ना समझो कमजोर,
जन सकती है कृष्ण चितचोर।
वो तो शक्ति स्वरूप तेजपुंज है,
ना होती हैं कभी अधीर।
हर प्राणी में प्रेम समरसता,
बेटा-बेटी मे समानता।

बीत गया युग पुरनाा,
आज की नई सदी में।
दूर अंतरिक्ष तक,
चमक रहे हमारे बेटे-बेटियाँ।।

किसी बात में ये सभी,
बिल्कुल भी कमतर नहीं हैं।
बनके अग्नि सूर्य समान,
दमक रहे हैं बेटे-बेटियाँ।

ना बनाए बेटा-बेटी
खेत खलिहान के जोत,
कोई बात नहीं।
भू-मण्डल का चप्पा-चप्पा,
अन्वेषण कर रहे हैं बेटे-बेटियाँ।।
सिर्फ बेटा ही करेगा,
ऐसा कोई काम नहीं।

विश्व भर में आज नाम
कर रही हैं बेटियाँ।

भेद जो करते हैं
बेटा और बेटी बोलकर।
सुन लें सभी वो लोग
अपने दिमाग-कान दोनों खोल के।

बेटा-बेटी एक जैसे,
आते कुक्षिसागर में।
फिर क्यों भेद दिखाते,
इनके सम्मान आदर में।
बेटा-बेटी तो जीवन प्राण तक,
कुल का उद्धार ही करते हैं।

जिस घर पर बेटा-बेटी में समानता,
वहाँ न कभी कोई भयावहता।
कल जो बहू घर आएगी,
बढ़े हैं परिवार में प्यार मधुरता।
बेटी को ना कमजोर समझो,
वो तो सृष्टि शक्तिरूप है।
मनु शतरूपा का स्वरूप।।

—सरोज डिमरी चमोली
उत्तराखण्ड

◆ कविता

यशोदा मैठाणी

प्रेम

परमपिता हैं प्रेम पयोधि
मानव या प्राणी एक बूँद है।
जीव मात्र, का सकल संचरण
तेज पुंज की किरण मात्र है।

जल में थल में और गगन में
विस्तृत भूमण्डल मे, सत्यलोक में
संपूर्ण प्रकृति में, सौर मण्डल में,
बस प्रेम, मात्र व्यवहार हृदय में।

परमेश्वर की इस रचना में
मानव केबेद पुराण शास्त्र में
देवतुल्य महान श्रेष्ठ जनों में
पशु-पक्षी और दृश्या-दृश्य तत्व में।

प्रेम समाया, प्रेम बसाया
प्रेम-प्रेम में दर्श दिखाया,
प्रेम पूर्ण भावों के भूखे
पुरुषोत्तम बन कर पाठ पढ़ाया।

जो भी जीव कर्म करता है
निज मन स्नेह जब भरता है,
तब होता वह कार्य अनूठा
सफल, श्रेष्ठ है प्रेम अजूबा।

प्रेम में छोटा-बड़ा, नहीं होता
सम आदर, अपनापन रहता,
निज पीड़ा दूजे का अनुभव
दुःख भी, हंसकर ही सह लेता।

प्रेम को देखो राम-शबरी में,
प्रेम को देखो कुब्जा-कृष्ण में।
प्रेम को देखो सावित्री में,
प्रेम को देखो श्रवण-पुत्र में।

मातृ प्रेम से जग नहीं अछूता
पति-पत्नी का विषय अनूठा।
भाई-बहिन का प्रेम भी सांचा
प्रेम पूर्ण सृष्टि रचि राखा।

कुछ अपवाद छोड़ सृष्टि के
सब प्राणी एक सूत्र मे बंधते हैं।
प्रेममयी वह धागा ही तो
सभी जनों का केन्द्र बिन्दु है।

प्रेम सत्य है प्रेम प्रभु है
प्रेममयी है यह संसार।
संयुक्त प्रेम मिल वाँट धरा पर
सत्य सनातन हो साकार।

—यशोदा मैठाणी
उत्तराखण्ड

◆ कविता

चन्दा डांगी

छोड़ सभी हम पॉलीथीन को, धरती अपनी चलो संवारे

केंसर का ये कारक है
प्राणी मात्र को मारत है
धरती माँ की गोद सुनी कर
बंजर इसे बनावत है
जानकर ये सभी खामियाँ
मोह पॉलीथीन का नहीं छूटे है।
14000 साल जीवित रहता
सबका जीवन ये हरता
गन्दगी चारों ओर फैलाता
बीमारियों को पीछे लगाता
मोह पॉलीथीन का नही छूटता।
हमने पॉलीथीन को अपनाया
कोरोना मे सबने जाना
पॉलीथीन ने मानव को लपेटा,
मोह पॉलीथीन का फिर भी नहीं छूटा।

आओ सब मिलकर प्रण ये ले,
छोड़ सभी पॉलीथीन को,
धरती अपनी चलो संवारे
कपड़े की थैली फिर अपनाए,
धरती माँ को स्वर्ग बनाए।

—चन्दा डांगी
रेकी ग्रैंडमास्टर, मंदसौर मध्यप्रदेश

◆ कविता

निशा भास्कर

अरुण की बेला

अरुणोदय की कोमल किरणें
आ रही, सुवर्ण आँचल ओढ़े।
चंचल गात-प्राण-पूर्ण उर्जा से
देने जग को नव गीत सलोने।

नीलांबर अरुणाभ हुआ ज्यों—
नववधु का स्निंग्ध दीप्त भाल।
आ गया चंचलता से परिपूर्ण
अथक पथिक ये भानु सुहास।

तरु का पल्लव हिल-मिलकर
कर रहे हैं नृत्य,पवन के साथ।
और सुगंध से भरी ये घाटियाँ
करती अर्चन,हे सुखद प्रभात!

झर रहे अधित्यका से प्रतिपल
अनुगूंज राग-विराग मधुरम।
खिल उठे हैं पुष्प-विटप-बेलें
खगवृंद स्तुत्य मग्न मधुलय।

नूतन आभा से पूर्ण प्रकृति
नित नवजीवन स्रोत बहाती है।
छोड़ो ना कल की बात प्रिये!
अभी नवगीत प्रेमपूर्ण गाते हैं।

—निशा भास्कर
नयी दिल्ली।

◆ कविता

श्रीकांत डोबरियाल

शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 2023

शिक्षक वही बना इस जग में
ज्ञानशक्ति का दाता
जिसने देखी सारी दुनिया
शिक्षक वही कहलाता।।

अभिरूचि केवल पठन पाठन की
और नहीं कुछ भाता
उत्कर्ष हुआ यदि छात्रवर्ग का
सम्मानित वह होता।।

गूगलमीट हो या जूमपट्ट वह
कभी न शिक्षक बन सकता
शुद्धिः अशुद्धिः का हस्ताक्षर
केवल शिक्षक ही होता।।

अनुशासित हो अनुशासन का
पाठ वही सिखलाता
राष्ट्रधर्म की रक्षा कर वह
नीति न्याय पर चलता।।

आदर्श बने यह जीवन मेरा
ध्येय यही बस होता
कभी न विस्मृत पथ हो मेरा
कर्तव्य मार्ग का द्रष्टा।।

चाहे राधाकृष्णन् हो या
राधा मैडम माता
अपनी छवि से इस समाज में
एक उदाहरण बनता।।

मिला यदि शिक्षक फिर ऐसा
धन्य हुआ यह जीवन सबका
अन्यथा भेड सदृश चालों सा
शिक्षक का भी ताता लगता।।

—श्रीकांत डोबरियाल

◆ माँ की स्तुति

ऋतु अग्रवाल

आओ माँ के चरण गहें

चली भवानी सिंह सवारी, आओ माँ के चरण गहें।
नवरात्री की अनुपम महिमा, मुख से सुंदर भजन कहें।।

नवदुर्गा का रूप लिए माँ, तारण भक्तों का करती।
हाथ पसारे जो भी आता,झोली खाली है भरती।।
दया प्रेम की मूरति मैया, निश्छल मन के भाव रहें।
नवरात्री की अनुपम महिमा, मुख से सुंदर भजन कहें।।

भैरव साथ लिए हनुमाना, अस्त्र-शस्त्र से सज्जित है।
रूप सुहावन है मैया का, हर जन देखो पुलकित है।।
ऊँचे पर्वत जा बैठी है, श्रद्धा की मन लहर बहें।
नवरात्री की अनुपम महिमा, मुख से सुंदर भजन कहें।।

दीप जला मन मंदिर अपने, पूजन अर्चन नृत्य करूँ।
विंध्यवासिनी अष्टभुजी माँ, नित तेरा ही ध्यान धरूँ।।
मन के पाप सकल मिट जाएँ, तेरे दर्शन लाभ लहें।
नवरात्री की अनुपम महिमा, मुख से सुंदर भजन कहें।।

—ऋतु अग्रवाल,
मेरठ

◆ चंद्रयान

एम. रफीक कुरैशी

कीर्तिमान

एक गौरवमय पल..
मैं देख रहा था कल...

बड़े उत्साह से लगाकर ध्यान..
ज़ब चंद्रमा पर उतरा अपना चन्द्रयान ..

दिल से सेल्यूट इसरो को
और जन जन को हो बधाई..

उतरा विक्रम चाँद पर
पताका भारत की फहराई....

अपने कौशल से इसरो ने
बड़ा ये कार्य कर दिखाया...

किया स्थापित कीर्तिमान
अपने देश का मान बढ़ाया..

—एम. रफीक कुरैशी

◆ चंद्रयान

चंद्रयान- 3

मंजिल क्या है,रास्ते क्या है,
ठान लो तो फासले क्या है।
लहर चुका ये परचम,
हुई सफल ये कहानी है,
भारत के इसी अंदाज़ की तो
पूरी दुनिया दीवानी है।
हार कर भी हमने,
हार को हराया है।
पूरे विश्व में सबसे पहले,
चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर,
अपना झंडा लहराया है।
क्रैश लैंडिंग पर थोड़ा
हौसला टूटा था,
चाँद पर जाने का
इरादा न छूटा था।

6 सितंबर
2019 में सबकी आँखें
नम हो आई थी,
जब चंद्रयान 2 का
संपर्क हमसे टूटा था।
पहले लैंडिंग की होड़ में,
रूस के हाथ असफलता आई है,
जहाँ नासा एजेंसी ने भी मात खाई है,
धैर्य रख कर ISRO ने
सफलता रचाई है।

14 जुलाई 2023 को LMW3 हमारी
आशाओं के साथ उड़ा था,
चंद्रयान 3 के साथ हम
140 करोड़ लोगो का विश्वास जुड़ा था।

मंगेश सिंह

के सिवन सर का दृढ़ संकल्प,
एस सोमनाथ सर की
मेहनत रंग लाई है।
जब चंद्रयान 3 की चाँद पर,
सॉफ्ट लैंडिंग कराई है।
तीन रंगों का प्यारा तिरंगा,
धरा के साथ यह शशि तक पहुँचा।
पूरे लोक में इसका यशगान हुआ,
वैज्ञानिकों के इस मेहनत का,
दुश्मनों ने भी सम्मान किया।
हम भारत वाले किसी काम में
पीछे नहीं हटते हैं,
ठान लेते तो उसे
हार हाल में उसे पूरा कर रहते हैं।
इसकी सफलता के लिए,
सभी दुवाएँ लगा रहे थे।
कुछ कलमा पढ़, तो कुछ आरती गा रहे थें।
अंतत: मेहनत और सबकी
दुवाएँ रंग लाई है,
हम भारतवासियों क
सपना साकार हुआ।
धरा तो धरा इस आर्यवर्त का,
नभ में भी जय जयकार हुआ।

।। जय हिंद।।

—मंगेश सिंह

◆ सामाजिक आलेख

कृष्ण जन्मोत्सव

सन्नू नेगी

भद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी,
देवकी के गर्भ से जन्म हुआ अतिविशिष्ट।
कारागार का भवन था, पहरे लगे थे हजार,
जन्म लेते ही प्रभु के, हो गये चमत्कार।

भगवान श्री कृष्ण का नाम आते ही ग्वाल-बाल, गोकुल, यमुना, गायें, मुरली गोपियाँ, सुदामा, वृन्दावन और राधा स्वत: ही मानसिक पटल पर उभर कर वृज की गलियों में मन चला जाता है। कृष्ण का जन्म एक साधारण जन्म नही, बल्कि एक असाधारण जन्म था। ईश्वर ने जन्म लेते ही सम्पूर्ण मानव जाति को संदेश दिया कि परिस्थितियाँ कितनी भी विषम क्यों न हो यदि उद्देश्य मानव कल्याण का हो,जन कल्याण का हो तो राहें स्वयं बन जाती हैं। अर्थात जन्म लेते ही कारगर की बेड़ियाँ टूट जाना, पहरेदारों का अचानक सो जाना, यमुना का जलस्तर कम होना शेषनाग का प्रभु के लिए छाता बनना। कृष्ण का जन्म से ही बाधाओं से सामना होता रहा। कारागार का जन्म कितना विषम था माता-पुत्र के लिए।

भगवान कृष्ण को सदैव उस चीज का त्याग करना पड़ा जिसने उन्हें अथाह प्रेम किया। माता देवकी से जन्म पाकर और माता यशोदा से जीवन पाकर दोनों का त्याग करना पड़ा। भला प्रभु का जीवन कहाँ सरल था? माँ को छोड़ना जीवन का सबसे दुर्बल पल और राधा को छोड़कर जाना कठिन पल। जनकल्याण के लिए श्रीकृष्ण ने हर उस प्राणी का त्याग किया जिनके लिए वो अमूल्य थे।भगवान

श्रीकृष्ण का जीवन न केवल रास लीलाओं पर केंद्रित था बल्कि कहि न कहीं सदैव समाज को ऊपर उठना उनका उद्देश्य रहा। भेद भाव मिटाना था।गोपियों को सखा बनाना न सिर्फ रास लीला के लिए बल्कि सच्चे मायने में देखा जाय तो स्त्रियों को समाज में स्वतन्त्रता में बराबर का स्थान देना था।समय प्राचीन भले ही था लेकिन सोच-विचार नवीन थी।

भगवान श्री कृष्ण ने जीवन जीने का सही और सच्चा मार्ग बताया। हर रिश्ते की मर्यादा और हर भाव का अर्थ बताया। प्रकृति से प्रेम, जीव-जंतुओं से लगाव, मानव को मानव का साथी बनाकर अमीर गरीब का भाव मिटाते हुए सुदामा के जीवन पर्यंत रखा बने रहे।

दुनियाँ को प्रेम की रीत सिखाई। कर्म को प्रधानता देकर कर्तव्यनिष्ठा के पथ पर सदैव अग्रसर रहने की प्रेरणा दी।साथ ही फल की इच्छा न रखने की सलाह दी। प्रभु कहते है कर्म इतनी तन्मयता से करो कि कुदरत को तुम्हारे कर्म में कोई संदेह न हो और बिना इच्छा के तुम्हे उचित फल मिल जाय।अधर्मी और दुराचारी को दंड देने में भी कोई संकोच मत करो।चाहे वो तुम्हारा अपना ही क्यो न हो। अर्थात पक्षपात रहित राजनीति।अपने और पराए के लिए समान दण्ड व्यवस्था। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति में नव विचार नव जागृति का संदेश दिया। स्वयं का जीवन भगवान श्री कृष्ण का एक उदाहरण था कि पग पग पर विषम परिस्थियों के होते हुए अर्थात अपने सगे ही सदैव शत्रु रहे। फिर भी कभी निराश नही हुए सदैव मुस्कुराते रहे। धनुरधर अर्जुन को भी महाभारत के युद्ध मे अंतिम दौर तक यही सिखाते रहे।

तो आइए आज भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर यशोदा के कान्हा से प्राप्त भेंट प्रेम, स्नेह, अनुराग अथार्त आत्मीय प्रेम का सृजन करें। जीवन को सुगम- सरल और आनंददायी बनाएँ।

।। जय श्रीकृष्णा।।

—सन्नू नेगी
गौचर, चमोली, उत्तराखंड

◆ सामाजिक आलेख

सुनील भट्ट

मेरी याद, मेरा वृक्ष, पर्यावरण रक्षक

मैं भी अपने गाँव जा रहा हूँ...आज विभिन्न शहरों से लोग गाँव के सार्वजनिक कार्य मे सम्मिलित हो रहे हैं, और मे भी अपना झोला व एक जोड़ी कपड़े लेकर निकल पड़ा गाँव के सार्वजानिक कार्यक्रम में...

वर्षों बाद ज्येष्ठ के महीने अपने जनपद और गाँव जाने का अवसर मिला, ज्येष्ठ महीने की दोपहरी मे सूर्य अपनी चरम जवानी पर हैं, और प्रचंड गर्मी धरातल मे विखेरे हुए हैं।..मेरा गाँव और मेरा विद्यालय लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर हैं।..विद्यालय की माटी को तिलक करके गाँव की तरफ चल पड़े...विद्यालय के रास्ते मे एक वृक्ष की लताओं पर अनेक प्रकार के पक्षी चह चहा रहे हैं, यह सभी अपने घोसलों मे नवजात शिशुवों को अपनी ठूँट द्वारा भोजन करवा रहे है, नये नये चूजों के आगमन पर पक्षी इठलाते हुए कलरव कर रहे है, प्रतीत होता है की ये सभी अपने चूजों के साथ मे आनंदविभोर है, उसी वृक्ष की छाँव मे अनेक पथिक ठंडी छाया मे विश्राम करते हुए दिखे...लगता है लम्बी यात्रा से थक कर कुछ छण के लिए अपनी थकान दूर कर रहे है। दृश्य बहुत ही आनंदित, मनमोहक और विहंगम है।..पक्षियों के कलरव से भिन्न भिन्न तरह की आवाजे आ रही थी...वही वृक्ष की छाँव मे बैठे पथिक अपनी अपनी यात्रा का उदेश्य एक दूसरे के साथ साझा कर रहे है, अपने अपने परिवार की बातें हो रही हैं, बेटा बेटियों के रिश्तों की बातें हो रही हैं, न जाने इस वृक्ष के नीचे

बैठ कर कितने रिश्ते बने होंगे, न जाने इस वृक्ष के नीचे कितने पथिकों ने थकान दूर की होंगी, न जाने आज तक यह वृक्ष कितने राहगीरों को अपनी ठंडी छाँव द्वारा उनकी थकान मिटा चूका होगा, न जाने कितने अनगिनत पक्षियों ने इस वृक्ष की शाखाओं पर परिणय सम्बंध बनाए होंगे, न जाने कितनी नई जिंदगानियों का गवाह होगा यह 'वृक्ष'।

यह वृक्ष एक ऐसी जगह पर हैं, जहाँ से अनेक गाँवों की सरहद शुरू होती हैं और यहाँ से सभी गाँव के रास्ते अलग अलग भी हो जाते हैं। सभी 'राहगीर यहाँ पर विश्राम' करते हैं।

जैसे जैसे हम गाँव की तरफ बढ़े। मन बहुत उत्साहित था, रोमांच के हिलोरे मार रहा था, की अभी तो 'वृक्ष' मिला, अभी पूरा गाँव देखना बाकी हैं।..

घर के आँगन मे दादा दादी अपने पोता-पोतियों के साथ खेला खेली कर रहे हैं, आँगन मे लगे पेड़ की ठंडी छाँव मे नई-नई 'बियाता गाय' (गौमाता) अपने 'नवजात शिशु' (बछड़े) के साथ पेड़ की छाया मे आराम कर रही हैं।..परन्तु बछड़ा अठखेलियाँ कर रहा, बछड़ा भरपूर जोश और ऊर्जा से अभिभूत हैं और 'पूँछ उठा कर धमा चौकड़ी' मचा रहा हैं।..पोता पोती भी बछड़े के साथ क्रीड़ा करने मे मस्त हैं। दादा दादी, बछड़े और पोता पोती की अनोखी 'बालक्रीड़ा के दृश्य मे अति मग्न' हैं, बड़ा ही आनंदकारी और रोमांचकारी दृश्य हैं। दूसरी तरफ 'ब्वारी गर्म गर्म चाय' का गिलास लेकर आ रही हैं, परन्तु बछड़े और पोता पोती की धमा चोकड़ी मे उलझ कर चाय विखेर देती हैं।..बछड़े के खुर से 'ब्वारी का पाँव भी बुरी तरह दब गया और जख्मी' भी हो गया हैं, 'दर्द बहुत जोरो' से हो रहा हैं, परन्तु ब्वारी ने दर्द को 'मजे' मे बदल दिया, तनिक भी दुखी नहीं हैं। और 'दुबारा लाती हूँ'। कह कर पुन: चाय लेने लिए चली गयी. ऐसा आँनंदमई दृश्य अन्य कोई हो ही नहीं सकता...आँगन मे लगा 'वृक्ष अपनी छटा' विखेर रहा हैं।

अभी दादा जी के निर्माणाधीन भवन के लिए लकड़ियों की भी आवश्यकता हैं।..परन्तु ईमारती लकड़ियों की व्यवस्था मे बाजार भाव पर बहुत मूल्य देना पड़ेगा जो दादा जी के बजट से बाहर हैं।..तभी दादी जी ने बताया की कई साल पहले उनके ससुर ने कुछ 'तूँण' के वृक्ष लगाए थे, इन वृक्षों की सरकार से अनुमति लेकर इनकी लकड़ी को भवन निर्माण के लिए उपयोग मे लाया जा सकता हैं।..परन्तु दो वृक्षों को काटने से पहले 'दस वृक्षों' का रोपण करना होगा. दादा जी तो पहले से ही प्रकृति प्रेमी हैं।.उन्होंने उसी समय 'बीस वृक्षों का रोपण करने का निश्चय' किया और पूरे बीस वृक्ष लगाए...आखिर बागवानी और माली का कार्य तो दादा जी का पसंदीदा कार्य हैं। अत: दादा जी ने भवन निर्माण के लिए लकड़ियों का बंदोबस्त कर लिया। ये 'वृक्ष की उपयोगिता' हैं।

दादा जी के लगाए गये वृक्षों मे से आज उन्ही मे से एक 'वृक्ष आँगन' मे और एक 'वृक्ष की छाँव मे पथिक विश्राम' कर रहे हैं और उन्हीं पर अनेक प्रकार के 'पक्षी कलरव' कर रहे हैं।...

गाँव के पानी मे सभी परदेशी अपने नहाने का इंतजार कर रहे हैं।...एक दूसरे से पहचान भी हो रही हैं।...सुरेश का बेटा इंजीनियर हैं, तो जग्गू का बेटा साइंटिस्ट हैं, नरेश का बेटा डॉक्टर हैं, सब तरह से अपने अपने गुणगान कर रहे हैं तभी दादा जी ने बताया की उनका 'बेटा माली' का कार्य करता हैं, और आज जिस पेड़ के नीचे पानी मे सभी लोग एकत्रित होकर अपना बखान कर रहे हैं यह 'विशाल बरगद' का पेड़ उनके बेटे रामकिशोर ने लगाया था। जिस पेड़ की वजह से आज तक यह 'जलश्रोत जिन्दा' हैं, बाकि गाँव के सभी 'नवले सुख गये' हैं। परन्तु एहसास न डॉक्टर को हुआ, न इंजीनियर व साइंटिस्ट को...परन्तु वहीं एक ओर 'मंगलू भाई' भी थे, जो मात्र 'पांचवी फेल' हैं, उनको एहसास हो गया था की पेड़ जनजीवन के लिए कितना महत्त्वपूर्ण हैं, पेड़ लगाना व उनकी 'देखभाल करना अपने बच्चों के जैसा' ही हैं। पेड़ से हमें फल, फूल, लकड़ी और प्राण वायु ऑक्सीजन मिलती है। पेड़ भूमि के तापमान को नियंत्रित करने में सहायक है। पेड़ हानिकारक कार्बनडाई ऑक्ससाइड को अवशोषित करते है और ऑक्सीजन देते है। ऑक्सीजन के बिना पृथ्वी पे कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता है।

मंगलू भाईजी की समझ से आज मुझे प्रतीत हो गया हैं की (यू.एन.एफ.सी.सी.सी), जैव विविधता (सीबीडी)

और भूमि (यूनाइटेड नेशन कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टिफिकेशन) मे बड़े-बड़े बुद्धिजीवी लोगो मे 'आज मेरे गाँव के मंगलू भाईजी भी शामिल हो गये, आधिकारिक तौर पर न सही परन्तु अपनी सोच से'।

गाँव मे प्रत्येक ख्वाल का एक उरख्यालू होता हैं, जहाँ पर रोज सुबह सट्टी, कोंड़ी व झंगोरा कूटा जाता हैं ताकि परिवार के लिए भोजन व्यवस्था की जा सके. यह एक दैनिक प्रक्रिया हैं। इसमे उरख्यालू और गंजेलु का उपयोग किया जाता हैं और ये दोनों एक दूसरे के पूरक है। अर्थात गंजेलु लकड़ी से ही निर्मित होता हैं। आपको बताना चाहता हूँ की 'गँजेलु भी बृक्ष की ही देंन' हैं।

मैंने अकसर यह देखा और सुना हैं की भूमंडल मे जितने भी बड़े शहर हैं उनमे प्रदूषित हवा हैं। जिसकी स्वछता पर आये दिन बहस होती रहती हैं और हवा को साफ रखने के अनेक कार्यक्रम और संधान किये जाते हैं, और उन कार्यों को पूर्ण करने के लिए अधिक धन की आवश्यकता होती हैं और अन्य कई संसाधनों को नष्ट कर विलय किया जाता हैं,

अर्थात हवा को साफ करने के लिए प्रकृति को और जहरीली दवा पिलाई जाती हैं।... 'बजाय पौध रोपण के'।

Nothing comes from anywhere,
Nothing goes anywhere.
Everything comes from here
Everything remains here.
in a changed form.

अर्थात सब कुछ भूमंडल मे ही वदले स्वरूप मे रह जाता हैं। यही प्रकृति का नियम भी हैं।

वैसे तो बहुत सारे वृक्ष अपने आप उत्पन्न हो जाते हैं ...परन्तु मुझे अच्छी तरह से मालूम है की गाँव के पानी मे 'बरगद का वृक्ष रामकिशोर ने बहुत वर्ष पहले' बहुत चाव से लगाया था, वृक्ष लगाने के पश्चात वह प्रतेक समय इनकी देख रेख व नियमित रखवाली करता था, ताकि इनको पशु न चर जाएँ. इनको पानी की आवश्यकता समय पर पूर्ण हो जाय आदि आदि...

आज उसी के कारण इन वृक्ष की लतावों पर 'अनगिनत पक्षी डेरा किये' हुए है, और अनगिनत पथिकों की थकान मिटा चूका होगा यह 'वृक्ष'।

हिंदु धर्म के अनुसार व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसकी देह को लकड़ियों द्वारा अग्नि को समर्पित किया जाता हैं।...और ब्यक्ति की देह अग्नि द्वारा पंचतत्व मे विलीन हो जाती हैं और आत्मा अपना दूसरा डेरा खोज लेती हैं। अर्थात धर्म के अनुसार भी पेड़ हमारे 'धर्म का एक अभिन्न अंग' हैं, इस वृक्ष ने हमें जिंदगी से मृत्यु तक लगातार हमारा साथ दिया. हम इस 'वृक्ष' को साथ रखे इसके बिना रह पाना संभव नहीं हैं।..... विचारणीय हैं। हम सब पर निर्भर हैं।

हिन्दू धर्म में वृक्षों को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। वृक्षों का जो स्थान हिंदू धर्म में है, वो किसी और धर्म में नहीं है। हिंदू धर्म में वृक्षों में देवी देवता का वास माना जाता है। यही कारण है कि वृक्षों की पूजा की जाती है।

श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि वृक्षों में पीपल का पेड़ सबसे श्रेष्ठ है। भगवान बुद्ध को भी पीपल के पेड़ के नीचे ही दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। महिलाएँ पुत्र प्राप्ति के लिए इस पेड़ की पूजा करती हैं, पीपल ही एकमात्र ऐसा 'वृक्ष' है जिसमें कीड़े नहीं लगते हैं, आदि-आदि...यहाँ पर प्रत्येक वृक्ष के बारे मे लिखना संभव नहीं हो पायेगा...

'समाजहित में वृक्षरोपण करने वाले व्यक्ति का परलोक में तारण भी वृक्ष करते हैं'।

'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्याँ जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥'

रामकिशोर आज भी गौ सेवा मे मग्न हैं और जीविकोपार्जन हेतु कोठियों मे माली का कार्य करता हैं। रामकिशोर का परिवार अपने दादा दादी के साथ गाँव मे रहता हैं।

—सुनील भट्ट

पत्रिका में विज्ञापन दें

भारतीय अद्वैत दर्शन एवं सनातन सिद्धान्तों पर आधारित स्वास्तिक पत्रिका प्रकाशित होने पर हर भारतीय गर्वित है। यह अपने आप में सबसे अनूठी पत्रिका बनने जा रही है। इस पत्रिका में भारत के विभिन्न राज्यों से अनेकों रचनाकारों की विविध विधान में रचनाएँ सम्मिलित हैं। और आप सभी ने इस पत्रिका को अमूल्य बनाया है।

स्वास्तिक पत्रिका को और अधिक विस्तार एवं मजबूती प्राप्त हो इसके लिए आप सबका सहयोग प्रार्थनीय है। यह आपकी अपनी स्वास्तिक पत्रिका है इसमें विज्ञापन देकर लाभ उठाएँ।

पूरा रंगीन पृष्ठ	रु. 11,000/-
आधा रंगीन पृष्ठ	रु. 5,100/-
चौथाई रंगीन पृष्ठ	रु. 2,100/-
पूरा श्वेत-श्याम पृष्ठ	रु. 5,100/-
आधा श्वेत-श्याम पृष्ठ	रु. 2,100/-
चौथाई श्वेत-श्याम पृष्ठ	रु. 1,100/-

आपके द्वारा दिए गये सहयोग से **'स्वास्तिक'** सम्पूर्ण भारत में सबसे विशिष्ट पत्रिका का स्थान अवश्य प्राप्त करेगी। तथा सनातन सतयुगीन वातावरण बनाकर विश्वबन्धुत्व, वसुदेवकुटुम्बकम् एवं ब्रह्माण्डमंडलम् के उद्घघोष को चरितार्थ करने में सहयोग मिलेगा।

आपकी मंगलमय शुभेच्छा की आकांक्षा में...!

विज्ञापन हेतु सम्पर्क सूत्र

नरेंद्र रावत
8392937240

प्रीति डिमरी
9458119749

सचेतना प्रगति संघ संस्थापक सदस्य

नरेंद्र रावत
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

सुशील राणा
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष)

प्रीति डिमरी
(राष्ट्रीय सचिव)

गीता तिवारी
(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

कविता भट्ट
(राष्ट्रीय प्रवक्ता)

सतीश भट्ट
(राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी)

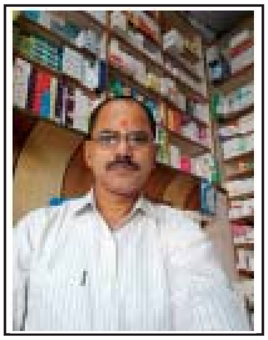

लक्ष्मण रावत
(राष्ट्रीय संगठन मन्त्री)

बिहारी लाल स्वामी
(राष्ट्रीय संरक्षक)

रंजना रावत
(आजीवन सदस्य)

सचेतना प्रगति संघ संस्थापक सदस्य

सुनील राणा
(आजीवन सदस्य)

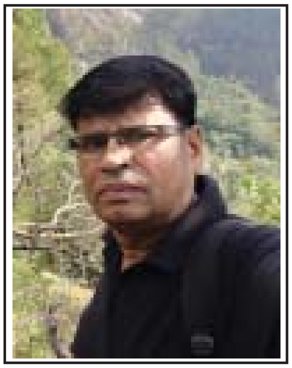

अरविन्द रावत
(आजीवन सदस्य)

सोहन रावत
(सामान्य सदस्य)

मनोज जोशी
(सामान्य सदस्य)

नरेंद्र बिष्ट
(सामान्य सदस्य)

सतीश तिवारी
(सामान्य सदस्य)

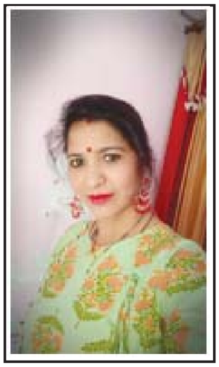

विनीता रावत
(सामान्य सदस्य)

मनीषा रावत
(सामान्य सदस्य)

ललिता रावत
(सामान्य सदस्य)

सचेतना प्रगति संघ/साहित्यिक सचेतना/स्वास्तिक पत्रिका

सदस्यता फॉर्म

सदस्याता संख्या : ....

मैं श्री/श्रीमती/कुमारी..... सचेतना प्रगति संघ एवं साहित्यिक सचेतना के सदस्य के रूप में अपना आवेदन देता/देती हूँ।

मैं संस्था के नियमों का पूर्ण रूप से पालन करूँगा/करूँगी। मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि सचेतना प्रगति संघ एवं साहित्यिक सचेतना के उद्देश्यों को पूर्ण करने में अपना यथासम्भव सहयोग प्रदान करूँगा/करूँगी।

अत: सचेतना प्रगति संघ एवं साहित्यिक सचेतना के संचालक मंडल से निवेदन है कि मुझे विशिष्ट आजीवन/ आजीवन/ सामान्य सदस्य के रूप में आवेदन स्वीकार करें।

पूरा नाम (बड़े अक्षरों में) : ....

पिता/पति का नाम : ....

व्यवसाय : ....

स्थाई पता : ....

....

वर्तमान पता : ....

....

आवेदन तिथि : ....

आवेदक के हस्ताक्षर

अध्यक्ष **सचिव**

लिंक द्वारा ऑनलाइन सदस्यता प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए वाट्सअप नम्बर पर सम्पर्क करें।
नरेंद्र रावत, 8392937240, प्रीति डिमरी, 9458119749

माँ भगवती की कृपा से माँ का धाम पूर्णता की ओर..।
उत्तराखंड, जिला चमोली, आदिबद्री के पास आली गाँव।

SARASWATI TRADERS

Home & office H.NO 64/6A RAJIVE COLONY, N H8
NEAR RAJIVE CHOWAK GURGAON

Contact 9810635145

Email id Vijay.anandpur@gmail.com

Deals in : Stationery house keeping & packing material & Industrial equipment.

GST NO : 9DXOPP423A127

Sanjay Pandey

9643699115
9810477876

Sanpack

Your Packaging Partner

Deals in :

PACKAGING MATERIAL, STORAGE MATERIAL, LOGISTICAL PACKAGING, TRANSPORT SAFETY PACKAGING ETC.

Email id aayushcontractor762@gmail.com

Mob. 9756351222

"स्वच्छता के प्रति हमारा संकल्प"

गदरपुर शहर के प्रिय नागरिकों,

क्या आप जानते हैं कि हम सभी का एक छोटा सा प्रयास हमारे शहर को बेहतर और स्वच्छ बना सकता है? हमने शहर की स्वच्छता को एक नई दिशा देने के लिए कड़ी मेहनत की है और अब हम आप सभी से सहयोग मांगते हैं ताकि आप शहर को स्वच्छ बनाने में हमारी मदद कर सकें।

- **सामग्री पृथक्करण और संग्रहण :** अब हम घरों से ही विभिन्न अपशिष्ट पदार्थों को सटीक तरीके से अलग–अलग एकत्र करने और संग्रहीत करने के लिए तैयार हैं।
- **कचरा एकत्रीकरण :** हमारा मिशन शहर से एकत्रित कूड़े में से सूखे कचरे को पुनर्नवीनीकृत उत्पादों में और गीले कचरे को जैविक खाद में बदलना है।
- **कूड़े की निगरानी :** हम आपसे अनुरोध करते है कि आपने आस–पास निगरानी रखें एवं कहीं भी कूड़ा जमा न होने दें यदि आप कहीं भी कूडा पाते है तो हमको अवश्य बतायें।
- **जन सहयोग :** हम सभी को मिलकर साथ काम करने का मौका है, अपने कूड़े को अलग करके शहर की सफाई में योगदान दें एवं लोगो को भी सहयोग कराने के लिये जागरूक करे ।
- **हमारा प्रतिबद्धता :** हम आपके साथ मिलकर एक स्वच्छ और हरित शहर की दिशा में कदम बढ़ाना चाहते हैं, जिसमें आपका सहयोग एवं सरहानीय कदम है।
- **निर्माण कार्य :** हमारे द्वारा सरकारी भवन एवं रोड का निर्माण कार्य कान्ट्रेक्ट बेस में किया जाता है, साथ ही हम आपके रहने के लिये भी सुन्दर एवं मजबूत घरों का निर्माण करते है

आइए, हम सब मिलकर अपने शहर की सफाई में योगदान दें और अपने शहर को गौरवान्वित बनाएं।
हमारा संकल्प, स्वच्छता के प्रति, अब साकार हो रहा है।

हमारा शहर, हमारा संकल्प।
स्वच्छ गदरपुर, सुन्दर गदरपुर।

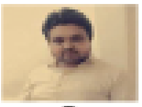

राजू डिसूजा
गदरपुर

हिन्दी पखवाड़ा आयोजन सितम्बर 2023

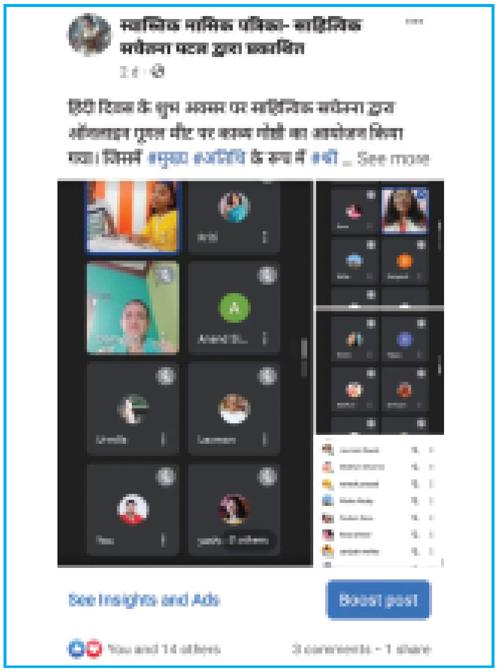

स्वास्तिक मासिक पत्रिका